@MahiSandesh MAHI SANDESH https://www.facebook.com/hindimagazinemahi/

साहित्यिक और सामाजिक मूल्यों की मासिक पत्रिका

R.N.I. No.
RAJHIN/2018/75539

माही संदेश

अपने बच्चों को
मैं बातों में
लगा लेता हूँ
जब भी
आवाज़ लगाता है
खिलौने वाला

राशिद राही

वर्ष : 1 अंक : 8 नवम्बर : 2018 पृष्ठ संख्या : 32 मूल्य : 35/-

बाल विशेषांक

पूछ रहा मन
क्या यही है बचपन??

अंदर पढ़ें

- सभी का बचपन होता है एक जैसा
- बड़े होकर क्या बनना है?
- होनहार बिरवान के होत चीकने पात...
- ...आप लेंगे किसी एक छोटू की जिम्मेदारी

Rhyme Public school

118, शिव विहार, मांग्यावास रोड, रजत पथ, मानसरोवर, जयपुर

स्थापना :- 2014 (PG to zth)

वर्तमानः- PG to 8th

खासियत : बाल केन्द्रित शिक्षण विधियों द्वारा तनावमुक्त वातावरण का निर्माण।

विद्यालय निदेशक आर.पी. चौधरी ने 'माही संदेश टीम' से मुलाकात में बताया कि हमारा मानना है कि आज के दौर में विद्यार्थियों को मशीन की तरह बनाकर उनसे परिणाम की उम्मीद की जाती है जिससे वो बहुत व्यथित हैं और इसी उद्देश्य से विद्यालय की स्थापना के समय ही उन्होंने ये खुद से वादा किया कि विद्यालय का वातावरण वो इस प्रकार का बनाएंगे जिससे बालमन का सर्वांगीण विकास संभव हो और इसी का पालन वो आज तक कर रहे हैं।

यहां अंग्रेजी माध्यम में शिक्षा दी जाती है किंतु इस बात का पूर्ण ध्यान रखा जाता है कि बच्चों को अपनी संस्कृति और सभ्यता पर गर्व हो ऐसा प्रयास किया जाए और इसीलिए विद्यालय में सभी महापुरुषों की जयंतियां और राष्ट्रीय उत्सव पूरी धूमधाम से मनाए जाते हैं।

विद्यालय के बालकों को समय समय पर विभिन्न धर्मस्थलों पर ले जाकर भारत की 'अनेकता में एकता' की संस्कृति से परिचित करवाया जाता है।

खेल-कूद, बाल केन्द्रित फिल्म और प्राकृतिक स्थलों का भ्रमण भी पढ़ाई के साथ अनिवार्य रूप से करवाया जाता है जिसका परिणाम यह रहा कि विद्यालय का परीक्षा परिणाम विगत वर्षों में श्रेष्ठ रहा है और भविष्य में भी ऐसी ही उम्मीद है।

विद्यालय निदेशक का कार्यालय अभिभावकों के लिए पूरे समय खुला रहता है जिससे विद्यार्थियों से संबंधित किसी भी प्रकरण की उन्हें व्यक्तिगत जानकारी हो। सभी शिक्षकों को भी यह स्पष्ट निर्देश हैं कि बच्चों से संबंधित किसी भी बिंदु को कभी अनदेखा ना करते हुए तुरंत उचित संज्ञान लिया जाए।

माही संदेश टीम को धन्यवाद देते हुए उन्होंने ये वादा किया कि हम सदैव यही कोशिश करेंगे कि समाज और देश की उम्मीदों पर खरे उतरते हुए भविष्य के लिए जिम्मेदार नागरिकों का निर्माण किया जाए।

माही संदेश (राष्ट्रीय पत्रिका)

संस्थापक डॉ. मदनलाल शर्मा*

❖ ❖ ❖

प्रधान संपादक रोहित कृष्ण नंदन (98874-09303)

❖ ❖ ❖

प्रबंध निदेशक डॉ. प्रेम प्रकाश शर्मा*

❖ ❖ ❖

सह-संपादक डॉ. महेश चन्द*
नित्या शुक्ला*
दीपा सैनी*
नीरा जैन*

❖ ❖ ❖

आईटी सलाहकार सोनू श्रीवास्तव*

❖ ❖ ❖

सोशल मीडिया (सह-सम्पादक) सूर्य प्रकाश उपाध्याय*

❖ ❖ ❖

संवाददाता ईशा चौधरी*
दीपक कृष्ण नंदन*

❖ ❖ ❖

अकादमिक सलाहकार डॉ. सुधीर सोनी*

❖ ❖ ❖

बिजनेस हैड अनुराग सोनी*

❖ ❖ ❖

मार्केटिंग सलाहकार राजेन्द्र कुमार शर्मा*
अनिल शर्मा*

❖ ❖ ❖

मार्केटिंग एग्जीक्यूटिव रिंकी सैनी*
अजय शर्मा (8368443640)

❖ ❖ ❖

परामर्श समिति

डॉ. गीता कौशिक* बालकृष्ण शर्मा*
डॉ. रश्मि शर्मा* डॉ. मीना शर्मा*
डॉ. नीति मिश्रा* प्रकाश चन्द शर्मा*

❖ ❖ ❖

संरक्षक मंडल रामेश्वरी देवी*

❖ ❖ ❖

डिजाइनिंग सागर कम्प्यूटर 79765-17072

❖ ❖ ❖

मुद्रण कांति ऑफसेट प्रिन्टर्स 9024765603

पृष्ठ संख्या : 32 आवरण सहित
प्रकाशन तिथि : प्रत्येक माह की 01 तारीख

: कार्यालय :

50-51 ए, कनक विहार कमला नेहरु नगर के पास, अजमेर रोड, हीरापुरा जयपुर-302021 (राजस्थान)।

ई-मेल :

mahisandesh31@gmail.com

मोबाइल : 9887409303

पत्रिका में प्रकाशित आलेख-रचनाएं, साक्षात्कार लेखकों के निजी विचार हैं। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र जयपुर होगा। चित्र व लेख के कुछ आंकड़ों को इंटरनेट वेबसाइटों से संकलित किया गया है।

नाम के आगे अंकित (*) चिह्न अवैतनिक है।

आइये मिलकर कुछ बेहतर करें

रोहित कृष्ण नंदन
प्रधान संपादक
माही संदेश
mahisandesheditor@yahoo.com

माही संदेश राष्ट्रीय समाचार पत्रिका का यह 8वां अंक है, पाठक और पारिवारिक सदस्य के रूप में आपका स्नेह यूं ही मिलता रहे। आज बाल विशेषांक आपके हाथों में सौंपा जा रहा है। हमारा मकसद यही है कि बच्चों को हम आगे लाएं और ये देश के भविष्य जीवन की बाधाओं को हंसते मुस्कराते हुए पार करें, अब से हर माह माही संदेश में बच्चों के लिए भी सामग्री पढ़ने को मिलेगी।

एक बात जो आपसे कहनी है महज 14 नवंबर को ही बाल दिवस पर हमारे अरमान क्यों जगते हैं, सिर्फ 14 नवंबर को ही क्यों हम बाल अधिकारों के प्रति सजग होकर लंबे भाषण देते हैं, सिर्फ 14 नवंबर ही क्यों? क्या हर दिन बच्चों को समर्पित नहीं कर सकते, क्या प्रतिदिन बाल अधिकारों के प्रति आवाज नहीं उठा सकते, हम सिर्फ वाह वाही लूटने को क्यों आतुर रहते हैं, मेरा प्रश्न आज सिर्फ यही है क्यों हम एक दिन के लिए जागृत होते हैं जबकि जागृत हमें प्रतिदिन होना है। आप सोचिए क्या हमें भूख या प्यास वर्ष में बस एक बार ही लगती है, नहीं साहब रोज गला सूखता है रोज पेट भरना पड़ता है। आप चाहे राजनेता हैं, अफसर हैं, या किसान हैं या कर्मचारी हैं, महिला हैं पुरुष हैं या किन्नर हैं हम सबको आगे आना होगा और बच्चों के लिए सिर्फ 14 नवंबर को नहीं बल्कि रोज उनके हक के लिए खड़ा होना होगा तभी हम देश के भविष्य को बेहतर बना पाएंगे, फिर से दिल में उम्मीद जगी है शायद हम कुछ बेहतर कर पाएं...

शेष फिर.....

एक नजर यहां भी

बचपन
सभी का बचपन होता है एक जैसा — नित्या शुक्ला — 5

ज्ञान ज्योति
बाल साहित्य से जोड़ें बच्चों को — राजकुमार जैन 'राजन' — 8

जीवन संदेश
बड़े होकर क्या बनना है? — विजय लक्ष्मी जांगिड़ — 10

कड़वा सच
क्या आप लेंगे ऐसे किसी एक छोटू की जिम्मेदारी — हिमानी अरोड़ा — 12
छोटू होने की पीड़ा भला कौन सुने — कुमार विजय — 13

आमने-सामने
बच्चों के साथ पंसद है समय गुजारना-नीलम — नित्या शुक्ला — 14

प्रेरणा
होनहार बिरवान के होत चीकने पात... — रचित सतीजा — 16

साहित्य संदेश
प्रेमचन्द की कहानियां — डॉ. महेश चंद — 17

काव्य-कलम — 19-21

मेरा बचपन
जीवन से जोड़ना सिखाता बचपन — मीरा परिहार 'मंजरी' — 22
बचपन के दिन भी क्या दिन थे — लक्षिता गोयल — 22

उपन्यास
उड़ती चील का अण्डा — डॉ. मदन लाल शर्मा — 23

पाठशाला
शिक्षा की अलख जगाता केन्द्रीय विद्यालय नंबर 2 — 24
ज्ञान का प्रकाश फैलाता ज्ञान विहार — 25
पॉप्पीन्स प्री प्राइमरी स्कूल — 27

सिनेमा संदेश
'पास बैठो तबीयत बहल जाएगी'-जगदीप — शिशिर कृष्ण शर्मा — 28

आवरण चित्र-राजेश कुमार सोनी*
भारतीय जीवन बीमा निगम में प्रशासनिक अधिकारी के पद पर कार्यरत हैं व पिछले चार वर्ष से फोटोग्राफी कर रहे हैं।

कनक का निशाना है ओलंपिक

प्रतिभाशील बच्चे अपनी पहचान खुद ही बनाते हैं। महज 10 वर्ष की आयु और निशाना अभी से ओलंपिक पर रखने वाली कनक रामावत, रामावत ग्रुप के एम डी जयप्रकाश रामावत की बेटी हैं जो अभी से अपनी पहचान बनाने के लिए प्रयासरत नजर आ रही हैं। जय प्रकाश रामावत ने माही संदेश को बताया कि अभी कनक चौथी कक्षा में पढ़ती हैं लेकिन पढ़ाई के बराबर ही शूटिंग को समय देती हैं और जी जान से इसमें पारंगत होने के प्रयास में अभी से प्रयत्नरत हैं। एमजीडी स्कूल में पढ़ने वाली कनक अपने प्रशिक्षक ए.के. सिंह की देखरेख में शूटिंग का प्रशिक्षण ले रही हैं।

बच्चे का मुंह जल गया है,
रोटी की गर्म भाप से।
अरे!
मत रोको उसे
मत टोको उसे,
वो सीखेगा
अपने आपसे।
और,
रोटी खुद सिखा देगी उसे,
गरमी से पेश आना
नरमी से।।

● **महेश कुमार शर्मा** ●
जयपुर

सभी का बचपन होता है एक जैसा

'बचपन' सिर्फ एक शब्द नहीं, बल्कि एक जतन है कोरे पन्नों की किताबों को रंग-बिरंगी यादों के साथ एक बस्ते में संजोए रखने का जो जीवन भर हर मोड़ पर अपनी सोंधी महक से हमें जिंदगी की जंग लड़ने और जीतने की शक्ति प्रदान करता है।'

बचपन, एक ऐसा मधुर शब्द जिसे सुनते ही ऐसा लगता है मानो शहद की मीठी बूंद जुबान पर रख ली हो। जिसकी कोमल कच्ची यादें जब दिल में उमड़ती हैं तो मुस्कान के मोती होठों पर अपने आप ही सज उठते हैं। जब भी इन महकते हरियाले पन्नों को फुर्सत में बैठकर खोला और इन पर जमी धूल की परतों पर दिमाग की बातों ने फुहारें डाली, यादों की सोंधी बयार ने उठकर हमेशा ही मन को भावुक बना दिया।

बचपन शब्द को पढ़ते या सुनते ही एक अजीब सी हलचल सबके भीतर महसूस होती है और न चाहते हुए भी हर शख्स यादों की खूबसूरत बारिश से भीग जाता है।

बचपन वही तो होता है जो कंचों को जेबों में भरकर खुश हो जाए, बचपन यानी जो रंग-बिरंगी पेंसिलों को मुट्ठी में दबाकर सो जाए, बचपन मतलब जो पतंगों को बस्ते में छुपाकर घर लाए, बचपन मतलब जो किताबों के बीच मोर पंख दबाकर विद्या के लिए प्रार्थना करे, बचपन मतलब जो मिट्टी को सानकर लड्डू बनाए, बचपन बोले तो जो बड़ों की हर चीज को छुपकर आजमाएं, बचपन मतलब जो गुल्लक में सिक्के जमा करे और जमा की गई चिल्लर से पूरी दुनिया खरीदने के सपने देखे, बचपन यानी पेड़ पर चढ़ने के बाद जो उतरने के लिए चिल्लाए, बचपन कहें तो वो जो अंदर से दरवाजा बंद कर बड़ों की परेशानी का सबब बन जाए, बचपन यानी तोहफों से मिलने वाली खुशी को कूद-कूद के जाहिर किया जाए और यदि तोहफा ना मिले तो उनके लिए जिद पर अड़ जाए। चाहे फिर उसके लिए जमीन पर लेटना पड़े या खिड़की पर चढ़ जाना पड़े तोहफा तो लेकर ही मानता है बचपन। कुल मिलाकर बचपन यानी शरारत, यदि मासूमियत और मस्ती की खिलखिलाती पाठशाला।

सभी का बचपन एक जैसा ही होता है चाहे वह नामचीन अमिताभ बच्चन हों या फिर प्रसिद्ध क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर। अमिताभ बच्चन ने अपने एक साक्षात्कार में कहा था कि 'बचपन में मुझे गिफ्ट्स का बहुत शौक था। किसी के भी लाए हुए गिफ्ट को खोलने में मैं जरा भी समय नहीं लगाता था। यहां तक कि अपने जन्मदिन पर मुझे सबसे ज्यादा खुशी यह सोचकर होती थी कि मां-बाबूजी के दोस्त मेरे लिए ढेर सारे गिफ्ट लेकर आएंगे। मुझे मिले कई तोहफों में से एक तोहफा वह भी था, जिसे पाकर मैं खुद को टॉप ऑफ द वर्ल्ड महसूस कर रहा था। वह तोहफा था बाबूजी द्वारा दी गई महंगी साइकिल। उस वक्त वह साइकिल पाकर मैं इतना खुश था, जितना कि आज महंगी-महंगी कार पाकर भी नहीं होता। जब बाबूजी ने मुझे वह साइकिल दी, तो मारे खुशी के मैं उससे जरा भी दूर नहीं होना चाहता था। जी करता था मैं बस उसे देखता ही रहूं। मैं उस साइकिल को अपने सिरहाने खड़ी करके सोता था और जब भी नींद खुलती थी, उसे साफ करने लगता था। मेरा वह साइकिल प्रेम घरवालों के लिए लंबे समय तक सिर दर्द रहा, क्योंकि मैं किसी भी हालत में उसे छोड़ना नहीं चाहता था। मुझे आज भी बाबूजी द्वारा दी गई वह साइकिल मुझे आज भी याद है और शायद में मेरी जिंदगी का सबसे खूबसूरत तोहफा था।'

सचिन तेंदुलकर ने भी अपनी आत्मकथा 'प्लेइंग इट माय वे' में बताया

है कि उन्हें भी बचपन में तोहफों का कितना शौक था। उनका बहुत मन था कि उन्हें अपने जन्मदिन पर साइकिल तोहफे के रूप में मिले, क्योंकि उनके सभी मित्रों के पास साइकिल थी। पर किसी कारणवश उनके पिता श्री साइकिल नहीं खरीद पा रहे थे। एक दिन सचिन साइकिल खरीदने की जिद पर अड़ गए और खिड़की पर जाकर खड़े हो गए कि जब तक साइकिल नहीं आएगी मैं घर के अंदर ही नहीं आऊंगा। और वही खड़े-खड़े न जाने कैसे उन्होंने अपनी गर्दन खिड़की में फंसा ली और फिर किस तरह घबरा कर उनके मां पिताजी ने बहुत ही मशक्कत के बाद उनकी गर्दन को खिड़की में से निकाला। फिर उसी समय जाकर उनके लिए साइकिल लाकर दी। बचपन भी कितना अनूठा होता है ना...जिद का क्या असर होगा यह नहीं जानता... जानता है तो बस अपनी प्रिय चीज को पाना। चाहे उसके लिए कुछ भी करना पड़े शायद यही जिद और धुन सचिन तेंदुलकर ने अपने क्रिकेट कॅरियर में भी कायम रखी। तभी वह क्रिकेट जगत के सर्वोच्च सितारे बन पाए।

बचपन की चाहतें भी निराली होती हैं, पेन्सिल थी, तो स्याही वाले पेन की चाह थी - पेन्सिल छीलना, नोंक बनाना झंझट लगता था। आज जेल पैन तक आ गए, तो पेन्सिल छीलने का इत्मिनान और पेंसिल की छीलन से आकृतियां बनाने की होड़ याद आती है। स्कूल जाना, तो शायद ही किसी को पसंद हो और अब कोई दोपहर को 3:00 बजे घर जाने के लिए कह दे तो शायद ही कोई ऐसा हो जो इंकार करे।

आज अलमारी खोलकर खड़े होते हैं सोचते हैं कि क्या पहनें, तो स्कूल यूनिफॉर्म बड़ी याद आती है वो बोरिंग सी यूनिफॉर्म जिसके रहते कुछ और सोचने की जरूरत ही नहीं थी।

'दोपहर में कोई सोता है माँ?' सब ने कभी न कभी ऐसा कहा ही होगा। और

मां के बने हाथ के खाने को तो कोई भी नहीं भूल पाता है चाहे वह हमारे देश के पूर्व राष्ट्रपति मिसाइल मैन डॉक्टर एपीजे अब्दुल कलाम ही क्यों न हों उन्होंने भी अपनी आत्मकथा अग्नि की उड़ान में लिखा है 'मैं अपनी मां के साथ ही रसोई में नीचे बैठकर खाना खाया करता था।

आज दफ्तर में खाना खाने के बाद जब आंखें मुंदने लगती हैं तो कहते हैं 'दोपहर में सोना नसीब वालों को मिलता है'। मां कहे कि आज घर पर रुकना- याद है कितना बवाल मचाते थे कि घर पर बोर हो जायेंगे क्या करना होता है घर में? और लगता है आज घर पर रुक कर चंद आराम के पल बिताने को कोई क्यों नहीं कहता? ओफ्फ कितनी खामोशी है वहां, वहां नहीं जायेंगे यह फरमान किसी के घर या किसी जगह के बारे में जरूर जारी किया होगा। आज इतना शोर बरपा है चारों तरफ कि उसी खामोशी के लिए तरसते हैं। 'तुम छोटे लग रहे हो'-सुनना कैसा नागवार गुजरता था। 13-14 साल की उम्र में लड़कों को ब्लेजर या लड़कियों का साड़ी पहनकर खुद को बड़ा साबित करना याद ही होगा। आज 'आपकी उम्र का पता ही नहीं चलता सुनना कितना भाता है।' पुराने गाने कितने बोरिंग लगते थे, आज उनकी मधुरता की पहचान होने लगी।

बचपन में हमेशा बाहर खाना खाने की जिद करते रहते थे क्योंकि घर का खाना उबाऊ लगता था और आज इतने रेस्टोरेंट्स में खाने का मौका मिलता है तो मां के हाथ के बने खाने की याद आती है। मां के बने हाथ के खाने को तो कोई भी नहीं भूल पाता है चाहे वह हमारे देश के पूर्व राष्ट्रपति मिसाइल मैन डॉक्टर एपीजे अब्दुल कलाम ही क्यों न हो उन्होंने भी अपनी आत्मकथा अग्नि की उड़ान में लिखा है 'मैं अपनी मां के साथ ही रसोई में नीचे बैठकर खाना खाया करता था। माँ मेरे सामने केले का पत्ता बिछाती, उस पर चावल एवं सुगंधित स्वादिष्ट सांभर देती, साथ में घर का बना अचार और नारियल की ताजा चटनी भी होती थी' इतना सादगी से भरा बचपन और इतना महान व्यक्तित्व कि यह सादगी उन्होंने राष्ट्रपति बनने के बाद भी नहीं छोड़ी। कुछ ऐसा ही होता है मां के हाथ के बने खाने का स्वाद स्नेह और प्यार से भरपूर।

नब्बे के दशक का बचपन वाकई में अनोखा था अकेला दूरदर्शन बच्चों के मनोरंजन के लिए नाकाफी साबित होता था। यह वह दौर था जब न केवल

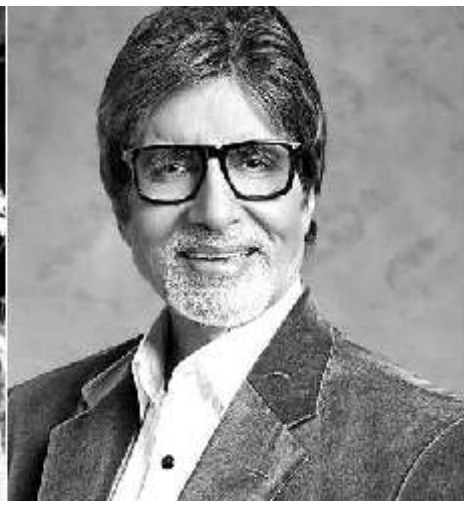

प्रसारण का समय कम था बल्कि लाइट जाने की समस्या भी बहुत आम थी। ऐसे में बच्चों के भरपूर मनोरंजन के लिए कॉमिक्स सारी गर्मी साथ निभाती थीं। चाहे चाचा चौधरी का कम्प्यूटर से तेज दिमाग हो या पिंकी के नटखट किस्से। साबू की शक्ति और बांकेलाल की 'कर बुरा हो भला' वाली किस्मत। ऐसी जोरदार कहानियां की घंटों बच्चे कॉमिक्स पढ़ते रहते थे। दोस्ती में कॉमिक्स शेयरिंग का मजा कोई नब्बे के दशक में पले लोगों से पूछे। घरों में सीडी प्लेयर नहीं होता था कैसेट प्लेयर होता था और गाने सुनने के लिए कैसेट होते थे। जिनसे गाने बजाए जाते थे और कभी जब कैसेट की रील उलझ जाती थी तो पेंसिल से रील को सही कर के बच्चे अपने आप को बड़ा इंजीनियर समझने लगते थे।

गुलेल, गिल्ली-डंडा, सितोलिया, तितली पकड़ना, घरौंदे बनाना ये सब आज बीते बचपन की बात हो गई है। आज का बचपन इतना सुविधायुक्त और वैभवशाली है कि उन खेलों से कोसों दूर है जिन्हें खेलकर कपड़ों से गीली मिट्टी की खुशबू आती थी। आज का साफ-सुथरा अभिजात्य बचपन वीडियो गेम, कम्प्यूटर, मोबाइल, ऑनलाइन गेम्स के बीच व्यतीत हो रहा है। पुराने और पारंपरिक खेलों से हमने और हमारे बड़ों ने जो सीखा-समझा है वह इन अत्याधुनिक खेलों के बस की बात ही नहीं है।

धूल और माटी में सनकर ही हमने जाना कि आँगन में कितने और कैसे-कैसे पौधे हैं। छुई-मुई कैसी होती है? तुलसी को आँगन की रानी क्यों कहा जाता है? घोंघें कैसे अपने ही घर को सिर पर उठाए चलते हैं? चंदा मामा क्यों हमारा पीछा करते हैं? और कई ऐसे प्रश्न कहानियों में ही सुलझ जाते थे। हथेली के ऊपर रेत और मिट्टी चढ़ाकर घरौंदे बनाते हुए अपना घर बनाने की कला अपने आप ही सीख ली। जब नन्हे शंख और सीपी से उसे सजाकर आत्मीयता से थपथपाया तो खूबसूरत घर को बनाने और सहेजने परिभाषा भी जानी। पतंग को ऊंचे आकाश में हवा की दिशा के खिलाफ साधते हुए जिंदगी की डोर को संभालना आ गया।

मिट्टी की वह मीठी और महकती सौंधी गंध भावनाओं में उतर कर हृदय को कैसे स्पर्श कर गई थी उसे आज भी शब्दों में पिरोकर व्यक्त करना मुश्किल है। तितली की सुंदर चित्रकारी को देखकर हमने ना जाने कितने कल्पना के घोड़े दौड़ाए, कौन बैठकर इतनी बारीकी से रंगों को सजाता है? माँ के आटा गूँथते ही चहचहाती गौरेयों का समूह खिड़की पर मंडराने लगता तो माँ बताती, देखों इसे कहते हैं समय की पाबंदी। अक्सर सोचती हूँ कि यदि बचपन में ही सबकुछ सैद्धांतिक, तार्किक और वैज्ञानिक तरीके से सीख लिया होता तो आज किस भोली समझ और मासूम ज्ञानार्जन को याद करके मुस्कराती?

पर अब लगता है जिंदगी की दौड़ में भागते-भागते हम अपना बचपन जाने कहां पीछे छोड़ आए। बहुत कुछ पाना था जिंदगी में कुछ बनना था। बड़ी-बड़ी चाहतों में छोटी-छोटी खुशियां दबकर रह गई। अब हम अपनी बड़ी-बड़ी चाहतों में अपने छोटे-छोटे बच्चों की नन्ही ख्वाहिशों को दबाने की कोशिश कर रहे हैं।

आजकल बच्चों के साथ साथ उनके माता-पिता भी जागरूक हैं और उनके चारों तरफ जानकारियों का ऐसा अथाह सागर है कि बिना कुछ सोचे-समझे सभी भेड़ चाल में शामिल हो इस जतन में लगे हैं कि कहीं उनका बच्चा और वे खुद इस बढ़ती हुई दुनिया में किसी से पीछे ना रह जाएं। बचपन अभी भी भोला और भावुक ही होता है पर बच्चों की खनकती-खिलखिलाती किलकारियाँ बरकरार रहें इसके ईमानदार प्रयास हमें ही तो करने हैं।

देश के ये मासूम नौनिहाल बचपन की यादें सहेजें, इसलिए जरूरी है कि हम उन्हें कठोरता से भरा नहीं बल्कि फूलों सा मुलायम मुस्कुराता बचपन दें। उनका नटखट रूप यूँ ही खटपट करता रहे, मीठे तुतलाते बोलों से पट-पट करता रहे, बचपन के हक में यह दुआ आज हमें माँगनी ही होगी।

दौड़ने दो खुले मैदानों में
नन्हे कदमों को साहब,
जिन्दगी बहुत भगाती है
बचपन गुजर जाने के बाद। ●

नित्या शुक्ला

बाल साहित्य से जोड़ें बच्चों को

यदि हम चाहते हैं कि देश का भविष्य उज्ज्वल हो तो हमें बालकों के व्यक्तित्व विकास की ओर ध्यान देना होगा क्योंकि आज के बच्चे ही कल देश का भविष्य संवारेंगे। बच्चों का जिज्ञासु मन कल्पना की उड़ान भरता है। उसके शांत मन में उथल-पुथल भी जारी रहती है। मन में उठते स्वाभाविक सवालों अथवा जिज्ञासाओं को अभिभावक या अध्यापक अक्सर टाल जाते हैं, परिणामत: बच्चे के व्यक्तित्व के स्वतन्त्र विकास का मार्ग अवरूद्ध हो जाता है।

परिवार बालक की प्रथम पाठशाला होती है और माता-पिता उस बालक के प्रथम शिक्षक। बच्चे के व्यक्तित्व निर्माण का बीजारोपण परिवार से ही होता है। शिक्षित और संस्कारवान अभिभावक व शिक्षक बालकों में काफी हद तक संस्कार सृजन का प्रयास करते हैं। उसकी जिज्ञासाओं को शांत करते हैं, उन्हें संयमित और धैर्यवान बनने की प्रेरणा देते हैं। यह अभिभावक, शिक्षक तथा उनकी परिस्थितियों पर निर्भर करता है कि वे बच्चे को किस सीमा तक विकसित कर पाते हैं।

आज गांव से लेकर शहरों तक मोबाईल, टी.वी., कम्प्यूटर, इंटरनेट ने बच्चों और बड़ों को अपने जाल में ऐसा जकड़ लिया है कि वे इसी में अपनी खुशियां ढूंढने में लगे हैं। इस कारण बच्चे तो जब देखो तब मोबाइल, टी.वी., या कम्प्यूटर स्क्रीन से चिपके ही नजर आते हैं। नतीजतन उन्हें प्रतिदिन कई क्रूरता और हिंसा भरे दृश्य देखने को मिल रहे हैं। निरंतर इस तरह के दृश्यों को देखते हुए बच्चे संवेदन शून्य हो रहे हैं। वे हिंसक, आक्रामक, एकाकी और चिड़चिड़े हो रहे हैं। बच्चों ने मैदानों में खेलना छोड़ दिया है। रिश्तों का सम्मान करना उनके मन से समाप्त होता जा रहा है।

बच्चों के दिलों में उतरती हिंसा, बढ़ते अवसाद और खोते जा रहे मानवीय मूल्यों को नियंत्रित करने वाले नैतिक और मानवीय दायित्वों का न कोई अर्थ रह गया है न कोई संदर्भ। पैसा कमा कर सारी सुख-सुविधाएं जुटा लेने की एक अन्धी दौड़ जारी है। अभिभावकों के पास बच्चों के लिए समय नहीं है। बच्चे घर में रहते हुए भी अकेले हैं। स्नेह और मार्ग दर्शन के अभाव में उनमें नकारात्मक भाव खूब विकसित हो रहे हैं। ऐसे माहौल में हम कैसे उम्मीद कर सकते हैं कि बच्चों का विचार तंत्र समुचित तरीके से विकसित हो, उनमें सोचने, समझने, अच्छे संस्कार पाने के लिए सद्साहित्य को पढ़ने के लिए ललक पैदा हो।

आज चैनलों पर, पत्र-पत्रिकाओं में, बाल साहित्य की गोष्ठियों में और बाल कल्याण के आयोजनों में यह बहस अक्सर होती है कि नए समय और नए तकनीकी-विस्फोट ने बच्चों के लिए विचलित होने की परिस्थियां पैदा की हैं। अब समय का चक्र पीछे तो नहीं मोड़ा जा सकता है। कम्प्यूटर, मोबाइल, इंटरनेट, टी.वी., सिनेमा आदि के जरिए जो तरह-तरह की दुनिया खुलती है, उनमें सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह का भाव है। यहीं पर अभिभावक और शिक्षकों की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। इन बच्चों को स्नेह, साथ चाहिए, आपका संबल चाहिए। बच्चों के लिए आवश्यक साधन जुटा देना ही पर्याप्त नहीं है, उन्हें भावनात्मक व आत्मीय साथ भी चाहिये। बच्चों को समझाना होगा कि आभासी दुनिया और वास्तविक दुनिया में क्या फर्क है। उनमें मित्रता, सहभागिता, सहयोग, अनुशासन, आत्मविश्वास आदि के जरूरी बीज बोने होंगे और इस कार्य में 'बाल साहित्य' ही अहम भूमिका निभा सकता है, निभा रहा है। बाल साहित्य बच्चों की कल्पनाशीलता तथा मानसिक क्षितिज को विकसित करने में सहायक होता है। बच्चों मे बेहतर संस्कार एवं चरित्र निर्माण के साथ ही नई पीढ़ी के निर्माण में बाल साहित्य को नकारा नहीं जा सकता।

'बाल साहित्य' से आशय बालकों के लिए लिखा जाने वाला, बाल

मनोविज्ञान की समझ के साथ बाल मन की अभिव्यक्ति करने वाला साहित्य है। बाल साहित्य वही कहा जाएगा जिसमें बालकों के कोमल मन के साथ-साथ उनके परिवेश की यथार्थ अभिव्यक्ति हुई हो, जिसे बालक सहज रूप से पसंद करें और उससे सद्प्रेरणा प्राप्त करें। आज प्रचुर मात्रा में बाल साहित्य प्रकाशित हो रहा है, बावजूद इसके बच्चों तक 'उत्कृष्ठ बाल साहित्य' नहीं पहुंच पा रहा है। इसके लिए सीधा-सीधा दोष पालकों, शिक्षकों व रचनाकारों का भी है। अधिकांश अभिभावक अपने बच्चों को महंगे इलेक्ट्रोनिक खिलौने, गेम्स, कपड़े, 'टू मिनिट नूडल्स, लेज तो खरीद कर दे देते हैं लेकिन स्वस्थ मनोरंजन के लिए अच्छी बाल पत्रिकाएं अथवा पुस्तकें खरीद कर नहीं देते। बच्चों को जब किताबें उपहार में दी जाती हैं तो उन्हें एक अजीब किस्म के फीके से उत्साह से ही स्वीकार किया जाता है। जब प्रौढ़ आयु के अभिभावकों, शिक्षकों में ही पुस्तकों के पठन, पाठन की रूचि का अभाव है तो बालकों में पुस्तकों के प्रति रूचि कैसे उत्पन्न की जा सकती है।

सबसे पहली आवश्यकता पठन-पाठन की परंपरा को एक आंदोलन के रूप में पुर्नजीवित करने की है। बालकों में पुस्तकों के प्रति रूचि नहीं है तो उनके प्रति वितृष्णा भी नहीं है। आवश्यकता इस बात की है कि बच्चों के आस-पास इस तरह का वातावरण निर्मित किया जाए कि वे स्वत: पुस्तकों की ओर आकृष्ट हो, उन्हें पढ़ने के लिए प्रेरित हों। इसके लिए अभिभावकों शिक्षकों, लेखकों, सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा गांवों, शहरों में बाल साहित्य की गोष्ठियां आयोजित की जाए, बच्चों की कार्यशालाएं की जाए, नई पुस्तकें पढ़ने के लिए बच्चों को प्रेरित व पुरस्कृत किया जाए। वहीं अच्छे लेखकों, इस क्षेत्र में नि:स्वार्थ भाव से कार्य करने वाले व्यक्तियों, संस्थाओं को सम्मानित किया जाए। इस तरह के प्रयास कई जगह हो भी रहे हैं, जो स्तुत्य है। यदि बालकों के हाथों में 'अच्छे बाल साहित्य की पुस्तकें होंगी तो एक पुस्तक-संस्कृति का विकास तो होगा ही', बच्चे भी पुस्तकों से अधिक समय तक दूर नहीं रह सकेंगे। हमें यह बात ध्यान में रखनी होगी कि बाल साहित्य नहीं रहा तो उसके रूप में पीढ़ी दर पीढ़ी आज तक हस्तांतरित हो रही संस्कृति भी नहीं रहेगी और तब मानवता, समाज, राष्ट्र और हम? बाल साहित्य के रूप में संजोए गए शिशु गीत, लोरियां, बाल गीत, कविता, कहानियां, नाटक, संस्मरण, यात्रा वृत्तांत, लोक कथाएं रूपी अमूल्य धरोहर काल कवलित न हो जाए। आने वाली पीढ़ी के हाथों यह संपदा हमें सुरक्षित सौपनी है।

राजकुमार जैन 'राजन'
आकोला, चित्तौड़गढ़

बड़े होकर क्या बनना है?

प्यारे बच्चों!

इस बार आपसे आपकी ही बात। कैसे हैं आप सभी? जानती हूँ काफी व्यस्त हैं। सोच रहे होंगे मैंने क्यों ऐसा प्रश्न पूछकर दुखती रग पर हाथ रख दिया। पर सच भी है कि आपके और हमारे बचपन में काफी अंतर आ गया है।

'वो कागज की कश्ती
वो बारिश का पानी'
वाला गुलजार का बचपन
अब कहीं खो गया है।

बचपन दब रहा है बोझ तले, पढ़ाई, करियर और इन सबके लिए ढेर सारी एक्टिविटीज और कॉम्पिटीशन्स।

करे तो क्या करे। सर उठाने की फुर्सत नहीं। उस पर सबकी अपनी अपनी अपेक्षाएं। 'मेरा बेटा तो बड़ा होकर डॉक्टर ही बनेगा।'

अरे रमेश एक टीचर होने के नाते मेरी सलाह है तुम्हें कि 'तुम्हे इंजीनियर ही बनना चाहिए।' ये सारे जुमले आम है और अभिभावक, शिक्षक व समाज के अलग अलग दृष्टिकोण के बीच बालक उसका बचपन कहीं खो रहा है। समय से पहले बढ़ती समझदारी की हमारी उनसे उम्मीद उन्हें अचानक बच्चे से बड़ा बना रही है।

मैं जानती हूं बच्चों कभी तो आपको सुनना पड़ता है कि तुम अभी बच्चे हो। कभी सुनते है अब बड़े हो गए बच्चों वाली हरकतें बन्द करो। समझ ही नहीं आता हम बच्चे हैं या बड़े हैं।

उस पर आश्चर्य ये की कहने को माता पिता, शिक्षा, समाज व परिवार सबका केंद्र बालक ही माना जाता है । माता पिता कहते है 'किसके लिए कर रहे है भई अपने बच्चों के फ्यूचर के लिए।'

शिक्षक भी उन्हीं के फ्यूचर की चिंता में आपको ज्यादा अंक लाने को प्रेरित करते दिखाई देते हैं मानो अच्छे अंक लाना ही अच्छे भविष्य की गारंटी हो। खैर सबकी अपनी-अपनी चिंताएं है मगर इन सब में आप लोग कहाँ है? आज इसी पर आपके मन की बात

शिक्षा का उद्देश्य क्या है?

आंतरिक शक्तियों का उद्घाटन व परिष्कार ही तो शिक्षा का उद्देश्य है। जबकि आज सिर्फ करियर निर्माण ही शिक्षा का उद्देश्य रह गया है।

विद्यालय की क्या भूमिका हो?

विद्यालय केवल किताबी ज्ञान देने का स्थान नहीं बल्कि भावी जीवन जीने की कला (कौशल) सीखने की प्रयोग शाला है। जहां बालकों को उनकी क्षमता, योग्यता, प्रतिभा के अनुसार जीवन कौशल सिखाये जाने चाहिए। आपदा प्रबंधन, निर्णय क्षमता का विकास, सामंजस्य करना परिस्थितियों को स्वीकार करना, मूल्यों का विकास, चरित्र का विकास, बालक के व्यक्तित्व में इन सबकी स्थापना करने की प्रयोगशाला है विद्यालय। जहां वह एक सम्पूर्ण इंसान बने। उसमें सकारात्मक व्यक्तित्व का विकास हो।

परिवार की क्या आवश्यकता?

एक बालक की प्राथमिक पाठशाला यानी उसका घर। जहां से वह संस्कार सीखता है। भाषा का, व्यवहार का, जीवन जीने का संस्कार। उसमें संस्कृति का विकास होता है। कहते हैं बालक देखकर यानी अनुसरण से ही सीखता है। मतलब ये की घर के लोगों का आपसी व्यवहार, संवाद, चरित्र, जीवन शैली का बालक के व्यक्तित्व पर अनजाने ही बहुत गहरा प्रभाव पड़ता हैं। अभिभावक बालक के साथ जितना ज्यादा क्वालिटी टाइम बिताते हैं बच्चे उतने ही इमोशनली बैलेंस्ड होते हैं उनमें संवेदनाएँ विकसित होती है। घर के लोगों का एक-दूसरे को महत्व व सम्मान देना बालक को भी यही सिखाता है। अस्तु बालक का मानसिक विकास अगर विद्यालय में होता है तो भावनात्मक विकास परिवार में ही भली-भांति हो सकता है ।

अब भी वक्त है

इससे पहले की हमारी नई पीढ़ी भावना शून्य व संवेदना शुष्क हो जाये। हमें उन्हें मानसिक, शारीरिक व भावनात्मक विकास के लिए उचित अवसर देने होंगे। ये केवल विद्यालय नहीं बल्कि परिवार व समाज को भी साथ मिलकर करना होगा।

क्या करना होगा?

परिवार को बच्चों में संस्कार डालने के लिए उनके साथ समय बिताना जरूरी है। भागदौड़ भरी जिंदगी में माता-पिता ये सुनिश्चित करे कि बच्चों के साथ उन्हें अधिक से अधिक समय किस प्रकार बिताना है?

ये सही है कि महंगाई व महत्वकांक्षी युग में जी रहे हम लोगों को आराम व सुविधाएं जुटाने के लिए बहुत काम करना पड़ता है जिससे परिवार को समय नहीं दे पाते। मगर जरा सोचिए कि जिनके लिए ये सब कर रहे हैं उन्हीं के लिए क्या हम काँटे नहीं बो रहे ।

ये तो वही बात हुई कि पहले तो दिन रात अपने स्वास्थ्य की कीमत पर धन कमाओ फिर उसको स्वास्थ्य ठीक करने में लगाओ मगर फिर भी पहले जैसा स्वास्थ्य नहीं मिल पाता । संयुक्त परिवार में न रह सके तो उन्हें समय-समय पर साथ रहने व जीने का मौका अधिक से अधिक देवे ।

बुजुर्गों का बहुत बड़ा योगदान है वे परिवार में अनुशासन व मर्यादा रखने में वे पूरी तरह से सजग रहते हैं। इससे बच्चों को न तो अकेलापन महसूस होता है न ही निराशा व नकारात्मकता आती है। हमें थोड़ी सामंजस्य में समस्या आ सकती है लेकिन हमें बच्चों के हित में ये कदम उठाने ही चाहिए। परिवार को अपने सामाजिक दायित्वों में बालकों को भी शामिल करना चाहिए। मानवता के हित के कार्य कभी कभी समय निकाल कर करने चाहिए। आपस मे सम्मानजनक व उत्तरदायित्व पूर्ण व्यवहार हो।

विद्यालय व शिक्षा व्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन की आवश्यकता है इस के लिए कुछ क्रांतिकारी कदम उठाए जाने चाहिए । एक शिक्षिका होने के नाते बालकों पर बढ़ते अध्ययन व करियर के बोझ को कम करने के लिए शिक्षा को करियर ओरिएंटेड होने की बजाए स्किल्स डवलपमेन्ट व जीवन कौशल के विकास पर केन्द्रित भी होना चाहिए। 12 वर्ष तक सभी विषयों का ज्ञान बोध करवाने में प्रतिभा व योग्यता के विकास का बेशकीमती समय निकल जाता है उसके बाद जो विषय पढ़े जाते है वे करियर को ध्यान ने रखकर।

तो फिर 12 वर्ष तक जो पढ़ रहे थे उसका क्या रोल। इस समय जो भी पढ़ाया जाए वह व्यक्तित्व निर्माण व बालकों के संवेगात्मक मानसिक व शारीरिक विकास को ध्यान में रखकर व जीवन कौशलों पर आधारित हो । खेल अभिरुचि वाला बालक खेल की शिक्षा व संगीत अभिरुचि वाला बालक संगीत की शिक्षा व प्रशिक्षण ही प्राप्त करें।

क्योंकि हमें हमारे बच्चे धनवान चाहिए या सुखी ये हमे तय करना है। इसमें बच्चों का क्या कुसूर हम उन्हें जो सीखा रहे हैं वे वही सीख रहे हैं।

मैं जानती हूँ आप सोचेंगे कोई भी अपने बच्चों को असंकारिकता व अपराध नहीं सिखाता मगर वे बन रहे है क्योंकि जाने अनजाने कहीं न कहीं से उन्हें ये सब ही सीखने को मिल रहा है।

यकीन मानिए ये समाज हम ही से मिलकर बना है अगर हमने इसमें कहीं भी दूषित प्रवृत्तियां फैला दी है तो कही न कही हमारे बच्चे उनकी चपेट में आएंगे ही। सिर्फ अपना घर साफ रखने से ही हम बीमारियों से नहीं बच सकते। स्वछता सब जगह जरूरी है । परिवार, समाज व विद्यालय सभी को मिलकर ये काम करना होगा । वर्ना हम आने वाली पीढ़ियों में प्रेम, दया, देशभक्ति, अपनापन ढूंढते रह जाएंगे। वक्त हमें क्षमा नहीं करेगा। क्योंकि कल का आधार आज है और आज हमारा है । बेहतर कल के लिए आज ही कदम उठाये। अपने बच्चों के बचपन को बचा ले। ●

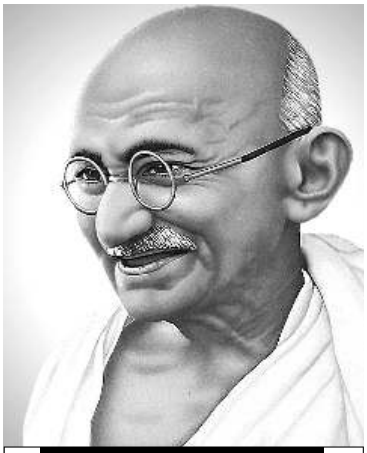

समाज के द्वारा बच्चों को क्या दिया जाये?

कहते हैं मनुष्य सामाजिक प्राणी है एक-दूसरे के सुख-दुख समझना, सहानुभूति प्रकट करना, सामाजिक कार्यक्रमों व सार्वजनिक उत्सवों में शामिल होना ये सब बालक के सामाजिक होने के लिए जरूरी है किंतु समाज के प्रति वह अपने उत्तरदायित्व कैसे पूरे करे? आजकल हमारे बच्चो में सामाजिक व राष्ट्रीय चरित्र का विकास इसलिए नहीं हो पाता क्योंकि वे सिर्फ मानवता की कहानियों व कविताओं में ही पढ़ते हैं न ही उनके घर, परिवार न ही उनके आसपास ऐसे लोग दिखाई देते हैं जो कि परोपकार व मानवता के लिए निःस्वार्थ भाव से काम कर रहे हों जरा सोचिए आज भी हम बापू, विवेकानन्द, सुभाष या फिर रामकृष्ण परमहंस, राजाराम मोहन राय इन सब का उदाहरण देते हैं जबकि वे अलग तरह के सामाजिक ढांचे में पले बढ़े। ऐसे में कम उम्र में ही अवसाद, आत्महत्या व अपराध आदि समस्याओं का जन्म होने लगता है।

विजय लक्ष्मी जांगिड़ विजया
एमपीएस इंटरनेशनल जयपुर

क्या आप लेंगे ऐसे किसी एक छोटू की जिम्मेदारी

माँ के हाथों से रोटी खाने की उम्र में, परिवार लिए रोटी कमा रहा है बचपन। नाजुक कली सा खिलने की उम्र में मुरझा सा गया है बचपन।

हर गली के नुक्कड़ पे चाय की टपरी का वो 'छोटू' मुखिया है आज वो अपने घर का।

जिस भारत देश में बच्चों को भगवान का रूप माना जाता है। उसी भारत देश की तस्वीर आज कुछ अलग सी है। क्योंकि बचपन जो इंसान के जीवन का बेहद ही खूबसूरत समय होता है जिसमें न ही किसी बात की चिंता और न ही कोई जिम्मेदारियां होती है। बस हर समय अपनी मस्तियों में खोए रहना, खेलना-कूदना और पढ़ना होता है। लेकिन सभी का बचपन ऐसा हो यह जरूरी नहीं।

विश्व में बाल मजदूरी की समस्या से तो आप वाकिफ होंगे ही। कोई भी बच्चा जिसकी उम्र 14 वर्ष से कम है और अगर वो जीवनयापन के लिए काम करे तो वह बाल मजदूर कहलाता है। गरीबी, लाचारी और माता-पिता की प्रताड़ना के चलते ये बच्चे बाल मजदूरी के दलदल में धंसते चले जाते हैं।

दुनिया भर में लगभग 215 मिलियन ऐसे बच्चे हैं जिनकी उम्र 14 वर्ष से कम होगी। और इन बच्चों का समय जो कि स्कूल में कॉपी-किताबों और दोस्तों के बीच नहीं बल्कि होटलों, घरों, उद्योगों में बर्तनों, झाड़ू-पोंछे और औजारों के बीच बीतता है।

भारत में स्थिति और भी गमगीन है क्योंकि दुनिया भर में भारत में ही सबसे ज्यादा बाल मजदूर पाए जाते हैं। 1991 की जनगणना के तहत भारत में बाल मजदूरों का आंकड़ा 11.3 मिलियन था जो कि 2001 में बढ़कर 12.7 मिलियन पहुंच गया था।

आजकल तो मंजर कुछ ऐसा है की हर गली के गली नुक्कड़ पर कई राजू-मुन्नी-छोटू-चवन्नी मिल ही जायेंगे जो हालातों के चलते बाल मजदूरी के दलदल में फंस गए हैं। बात सिर्फ बाल मजदूरी तक ही सीमित नहीं है लगभग 2.5 मिलियन बच्चे कई घिनौने कुकृत्यों का भी सामना कर रहे है। जिनका बच्चों के मासूम मन पर गहरा प्रभाव पड़ रहा है। देश के बहुत से छोटे-बड़े एनजीओ इन्हीं कुकर्मों और कुरीतियों को खत्म करने में लगे है। इन्हीं एनजीओ की रिपोर्ट के अनुसार लगभग 50.2 प्रतिशत ऐसे बच्चे हैं जो सप्ताह के सातों दिन काम करते हैं, 50 प्रतिशत बच्चे शारीरिक प्रताड़ना, और 53.22 प्रतिशत बच्चे यौन उत्पीड़िता के शिकार हो रहे हैं। इतना ही नहीं आज का हर दूसरा बच्चा किसी न किसी भावनात्मक रूप से प्रताड़ित है।

1986 में बाल मजदूरी के रोक थाम और उसमें सुधार लाने के लिए सरकार ने चाइल्ड लेबर एक्ट बनाया। जिसके तहत रोजगार की न्यूनतम आयु 14 घोषित कर दी थी तथा इसके कम आयु के बच्चों को काम देना एक दण्डनीय अपराध है। इसी के साथ सरकार नेशनल चाइल्ड लेबर प्रोजेक्ट के रूप में बाल मजदूरी को जड़ से खत्म कर ने के लिए कई बड़े कदम भी ले चुकी है। इस प्रोजेक्ट का उद्देश्य बाल मजदूरी को खत्म करना ही नहीं बल्कि इसमें फंसे लोगों को निकलना भी है। 2015 की जनवरी में नेशनल चाइल्ड लेबर प्रोजेक्ट स्कीम को 21 विभिन्न भारतीय प्रदेशों में 250 जिलों तक पहुंचाया गया था। बच्चों का शिक्षा का रुझान बढ़ाने के

लिए भारत सरकार ने आठवीं तक की शिक्षा को अनिवार्य ही नहीं नि:शुल्क भी कर दिया है। लेकिन गरीबी और लाचारी के चलते सरकार की ये योजना भी फेल होती सी नजर आ रही है। कई निचले स्तर के माँ बाप चाहते हुए भी अपने बच्चों को स्कूल शिक्षा लेने नहीं भेज पाते क्योंकि उन बच्चों के स्कूल चले जाने से उस परिवार की आमदनी कम हो जाती है।

2016 की एक रिपोर्ट के तहत आज भारत में लगभग 60 मिलियन बच्चे बाल मजदूरी के दलदल में फंसे है। अगर यहां आंकड़े सही है तो सरकार को अपनी आँखें खोलनी होगी और बाल मजदूरी के सरताज होने के कलंक को मिटाना होगा। इतने बड़े आंकड़े में बाल मजदूर होने का कारण सिर्फ और सिर्फ गरीबी ही नहीं निरक्षरता भी है। हमारी आज की सोसाइटी में एक तरह बच्चों का एक ऐसा समहू है जो 5 स्टार होटल में जाकर 56 भोग का आनंद उठाता है और दूसरी तरफ ऐसे बच्चों का समूह है जो उनकी जूठनों को साफ करके अपना जीवन यापन करने को मजबूर है।

सरकार ने बाल मजदूरी को संगीन अपराध बताकर उसके खिलाफ काफी सख्त कानून भी बना दिए। परन्तु सरकार ये कैसे भूल गयी की इनके जीवन यापन के लिए भी उन्हें कोई इंतजाम करना होगा क्योंकि ऐसे में ये बच्चे क्या करें, कहा जाये जिससे थे अपने परिवार के लिए दो वक्त की रोटी कमा सकें।

सरकार को बाल मजदूरी को जड़ से खत्म करने के लिए गरीबी के खिलाफ कुछ पुख्ता कदम उठाने होंगे। बल्कि में तो कहती हूं कि सिर्फ सरकार को ही नहीं हमें भी बाल मजदूरी के खिलाफ सरकार के साथ कदम से कदम मिलाना होगा। जिससे हर बच्चा शिक्षित हो सके।

क्या आपको नहीं लगता कि कोमल बचपन को इस तरह गर्त में जाने से आप रोक सकते हैं? देश के सुरक्षित भविष्य के लिए वक्त आ गया है कि आपको यह जिम्मेदारी अब लेनी ही होगी। क्या आप लेंगे ऐसे किसी एक मासूम की जिम्मेदारी?

हिमानी अरोड़ा

छोटू होने की पीड़ा भला कौन सुने

दिनों-दिन देश का स्तर नीचे गिरता जा रहा है! कभी रूपया लुढ़कता है तो कभी कुर्सी के लिए नेता। लेकिन एक 'भविष्य और जीवन' लुढ़कता हुआ किसी को नजर नहीं आता। वो है एक ढाबे पर काम करता हुआ छोटू लगभग उसकी उम्र 10 वर्ष होगी लेकिन इतनी सी उम्र में उस पर पूरे परिवार का बोझ लदा होता है।

इसका अहम कारण दो कौड़ी की राजनीति। सरकार सिर्फ अपना वोट बैंक भरना जानती है! गरीब और अनाथ बच्चों का नहीं। हृदय बहुत विदीर्ण होता है जब छोटे-छोटे बच्चों को भट्टी में तपते हुए! अपने से ज्यादा वजनदार चुने पत्थर की तगार सर पर ढोता हुआ देखता हूँ।

मैं सिर्फ मोदी जी से एक बात पूछना चाहता हूँ? की जिस वक्त आप अपनी छोटी उम्र में चाय बेचते थे। क्या उस वक्त आपकी इच्छा नहीं होती थी? पढ़ाई करने की, स्कूल जाने की, अच्छे कपड़े पहनने की? अमीरों के बच्चों को देख कर आपका मन नहीं विचलता था? या फिर ग्लास ही धोना चाहते थे? जिस तरह आपकी जिज्ञासा थी कि मैं भी पढूं आगे बढूं?

एक अच्छा नेता बनूं फिर प्रधानमंत्री के सपने भी देखे होंगे, उसी तरह कितने छोटू हैं जिनका ये सपना है, या फिर आप देश का स्तर ज्यों की त्यों ही रखना चाहते है? सरकार उद्योगपतियों अडानी, अम्बानी, टाटा, बिड़ला जैसे अमीरों के 3 लाख करोड़ रुपये माफ कर सकती है। यदि इसका 1 प्रतिशत हिस्सा बाल मजदूरी, गरीबों पर खर्च करती तो काफी सुधार हो सकता था। सभी सुख-सुविधाओं से परिपूर्ण होने के बावजूद भी सरकार राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति राज्यपालों के वेतन में वृद्धि कर रही है क्यों?

इसके बजाय ये गरीबों और बाल मजदूरों पर भी सोचे तो ही देश का विकास होगा! सरकार को वादों और कंपनियों में ओएमयू से देश का विकास नही होगा। जब तक देश की आने वाली पीढ़ियां ही सुरक्षित नहीं हैं! तो देश का विकास नहीं हो सकता है। चुनावी खर्च में भारत अमेरिका से भी ज्यादा खर्च करता है! 2014 में लोकसभा चुनावों में 33 हजार करोड़ खर्च हुए थे। अमेरिका 2012 में राष्ट्रपति चुनावों में 27 हजार करोड़ खर्च हुए थे। भारत का 2019 में ये आंकड़ा काफी हद तक बढ़ता हुआ नजर आता है! जो देशहित में नहीं है। अगर इसका कुछ अंश भी बाल मजदूरी में व्यय किया जाये तो उनका भी भला हो सकता है। **कुमार विजय**

बच्चों के साथ पंसद है समय गुजारना-नीलम

नीलम सक्सेना चंद्रा आईईएस अधिकारी हैं एवं वर्तमान में पुणे मेट्रो रेल कॉरपोरेशन में जनरल मैनेजर के पद पर कार्यरत हैं। नीलम जी ने अब तक तक लगभग 50 से भी ज्यादा उपन्यास, कहानी संग्रह, कविता संग्रह और बाल साहित्य की किताबें लिखी हैं। आप हिंदी और अंग्रेजी दोनों ही भाषाओं में कुशलता पूर्वक लिखने में पारंगत हैं। वर्ष 2014 में इन्हें प्रतिष्ठित रविन्द्र नाथ टैगोर अन्तराष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। फोर्ब्स इंडिया की 100 सबसे प्रभावशाली लेखिकों की सूची (2014 संस्करण) में इनका नाम है। नीलम सक्सेना का नाम लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में 2015 में एक लेखिका के रूप में शामिल किया गया था जिन्होंने 1 साल में सबसे ज्यादा किताबें प्रकाशित की। उन्हें अमेरिकन एंबेसी द्वारा आयोजित काव्य प्रतियोगिता में भी पुरस्कार प्राप्त हो चुका है और वे और भी कई पुरस्कारों से नवाजी जा चुकी हैं। जिनमें मुख्य है भारत निर्माण साहित्य पुरस्कार 2017, रेल मंत्रालय द्वारा प्रेमचंद पुरस्कार, रेडियो सिटी के द्वारा फ्रीडम पुरस्कार, और ऑल इंडिया पोयट्री सोसाइटी के द्वारा सर्वश्रेष्ठ रचना का पुरस्कार। इतनी सारी उपलब्धियों और एक सफल आईईएस ऑफिसर होने के बावजूद नीलम सक्सेना का स्नेही और निर्मल स्वभाव उन्हें विशिष्ट बनाता है। आज आपके समक्ष प्रस्तुत हैं माही संदेश की सह सम्पादक नित्या शुक्ला द्वारा की गई बातचीत के कुछ अंश जिसमें नीलम सक्सेना चंद्र ने अपने अनुभव हमारे साथ बांटे और बताया कि बाल साहित्य के प्रति उनका लगाव कैसे शुरू हुआ और उनका इस साहित्यिक यात्रा का अनुभव अब तक कैसा रहा।

आप अपने बारे में बताइये किस तरह आपने आईईएस अधिकारी बनने का सफर तय किया?

मुझे गणित बहुत पसंद थी और शायद इस वजह से मेरा इंजीनियरिंग की तरफ शुरू से ही रुझान था। मैं बहुत बचपन से जानती थी कि मुझे इंजीनियर बनना है, हालांकि मैं मेरे ख्वाब खुद तक ही रखती थी और उसके लिए मेहनत में कोई कसर नहीं छोड़ती थी। वि.एन.आई.टी, नागपुर में जब मेरा चयन हुआ तो बहुत खुशी हुई। तब जितनी जानकारी मुझे थी, उसके आधार पर मुझे लगा कि आईईएस अधिकारी बनना ही मेरे लिए सबसे उपयुक्त है और उसकी परीक्षा में सफल होने हेतु अपनी जी-जान लगा दी।

आपकी दिनचर्या क्या रहती है, क्या करना आपको विशेष पसन्द है?

मेरी दिनचर्या बहुत व्यस्त रहती है क्योंकि एक सीनियर पोजीशन पर होने पर दायित्व बहुत बढ़ जाता है। मेरा काम मुझे बहुत पसंद है और मैं अपनी तरफ से पूरी कोशिश करती हूं कि इस दायित्व को अच्छी तरह से निभाऊं। मुझे रोज सैर पर जाना बहुत पसंद है, कभी-कभी टेबल टेनिस भी खेल लेती हूँ और रात को कुछ लिखे बिना मुझे नींद नहीं आती। कुल मिलाकर व्यस्त रहती हूँ।

अपने सफल और व्यस्त व्यावसायिक जीवन में आप कैसे समय निकाल पाती हैं लिखने के लिए?

व्यस्त तो मैं जरूर हूँ, पर मैं एक संवेदनशील महिला हूँ और जब तक मेरी भावनाओं और एहसासों के झरने को स्थिरता नहीं मिलती, तब तक मुझे अच्छा नहीं लगता है। यह स्थिरता मुझे लिखने से ही मिलती है और इसके लिए मैं समय निकाल ही लेती हूँ। लिखने का मेरा पसंदीदा समय रात को है।

आपकी साहित्य यात्रा कैसे शुरु हुई और बाल साहित्य के प्रति आपका रुझान कब और कैसे हुआ?

मेरी साहित्य यात्रा बचपन में ही शुरू हो गयी थी। तब मैं कवितायें लिखा करती थी। मेरे बहुत ही कम मित्र इस बात को जानते थे, पर बाद में कुछ कवितायें 'द हितवाद' नामक समाचार पत्र में प्रकाशित हुईं। इससे मुझे पहली बार विश्वास जगा कि मैं अच्छा लिखती होंगी। बाद में यह कवितायें मेरी डायरी तक

सीमित रहीं। शादी के बाद जब मेरी बेटी हुई तो मैं उसे रोज अपने मन से एक नयी कहानी सुनाती थी। बेटी के कुछ बड़े होने पर, मेरे पति के कहने पर, मैंने इन कहानियों को चंपक, नंदन, चंदामामा इत्यादि में प्रकाशन हेतु भेजीं। धीरे-धीरे यह प्रकाशित होने लगीं, जिससे मेरा आत्मविश्वास और बढ़ा और मैंने लिखने के नए क्षेत्र भी खोजे।

वैसे तो पढ़ने में बच्चों के लिए लिखी कहानियां बहुत आसान प्रतीत होती है पर कहते हैं बच्चों के लिए लिखना कठिन कार्य है क्योंकि उसके लिए लेखक को एक अलग ही दुनिया में खोना पड़ता है आप कैसे इतनी आसानी से यह कार्य कुशलता से कर पाती हैं?

शायद इसके दो कारण हैं - पहला, मैं वो समय अब भी नहीं भूली हूँ जब मैं बच्ची थी। जब भी मैं बच्चों की कहानियां लिखने बैठती हूँ, अपने मन के भीतर छुपी उस बच्ची से पूछती हूँ कि क्या उसको मेरी कहानी पसंद आई? यदि वो 'हाँ' कहती है, तभी मैं आगे बढती हूँ। दूसरा कारण शायद यह है कि मैं बच्चों से बातचीत के जरिये उनसे हरदम जुड़ी रही हूँ। मुझे बच्चों के साथ समय गुजारना बहुत अच्छा लगता है।

बचपन, युवावस्था और वृद्धावस्था आपकी नजर में क्या है, और आप को क्या लगता है कि व्यक्ति किस दौर को सर्वाधिक आनंद पूर्वक जीता है?

बचपन, युवावस्था और वृद्धावस्था यह सब एक ही जिन्दगी के अलग-अलग पहलू हैं और तीनों एक-दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं। इन्हें कोई अलग नहीं कर सकता। एक आशावादी व्यक्ति इन तीनों अवस्थाओं में आनंद महसूस करता है। बचपन वो समय होता है जब ख्वाब देखने चाहिए, युवावस्था में इन्हें पूरा करना होता है और यदि यह दो कार्य हो गए, तो तीसरा अपने आप ही अच्छा हो जाता है। आप जैसा करेंगे आपको वैसा ही मिलेगा।

आपकी बातों से लगता है कि आपने बचपन भरपूर जीया है आपके बचपन की कोई ऐसी मधुर याद जो आप हमारे पाठकों के साथ बांटना चाहेंगी?

मैं बचपन में अत्यंत शांत रहती थी। तब मुझे और लोगों से बात करना या तो पसंद नहीं था या फिर मैं डरती थी। मैं किताबों में खोयी रहती। मेरा परिवार ही मेरे लिए सब कुछ था और उसके अलावा मैं बस सपने देखा करती थी। मेरे ख्वाब उमंगों से भरपूर रहते और मैं बस यह जानती थी कि एक दिन मुझे अपने चारों तरफ एक ऐसी दुनिया बनानी है जो आस पर टिकी होगी।

क्या आपको भी लगता है कि आजकल के बच्चों का बचपना और मासूमियत कहीं मोबाइल और गैजेट्स की दुनिया में खोता जा रहा है?

जी हाँ, यह एक कटु सत्य है कि बच्चों का बचपना और मासूमियत कहीं मोबाइल और गैजेट्स की दुनिया में खोता जा रहा है। सारे शरीर को चलाने की जगह हम सिर्फ उंगली और आँखें चलाने तक सीमित होते जा रहे हैं, जो बच्चों के लिए अत्यंत हानिकारक है। परन्तु, यह भी एक सत्य ही है ना कि बच्चे अपने अभिभावकों से ही सीखते हैं? जब मेरी बेटी छोटी थी, तब मैंने निश्चय किया था कि मैं कभी टेलीविजन नहीं देखूँगी क्योंकि इससे उसको भी यह आदत लग जाएगी। करीब बीस साल से मैंने टेलीविजन नहीं देखा, और धीरे-धीरे मेरी बेटी भी अपना समय टेलीविजन पर कम ही बिताती थी। यदि हम चाहते हैं कि बच्चे मोबाइल्स और गैजेट्स में ज़्यादा समय न बिताएं, तो हमको ही शुरुआत करनी होगी।

आप आजकल के तकनीकी दुनिया से प्रभावित बच्चों को क्या संदेश देना चाहेंगी ?

मैं बच्चों से यह कहना चाहूंगी कि तकनीकी रूप से आगे बढना बहुत अच्छा होता है और उसके बिना कोई देश विकास नहीं कर सकता। तो तकनीकी रूप से तो बढ़ो ही, पर उसके साथ-साथ अपने आप को अपनी जमीन से भी जोड़े रखो। मेरे द्वारा लिखी हुई कुछ पंक्तियाँ यहाँ मुझे याद आ रही हैं,

इन कंक्रीटी जंगलों में,
इंसान बनकर रह गया है आधा;
सृष्टि के साथ-साथ चलो,
जितना माँगोगे, मिलेगा उससे ज्यादा!

वे युवा जो भविष्य में रचनात्मक लेखन के क्षेत्र को अपना कार्यक्षेत्र बनाना चाहते हैं उनके लिए मार्गदर्शन की कुछ बातें अगर आपके हैं बताना चाहें?

जो युवा रचनात्मक लेखन के क्षेत्र को अपना कार्यक्षेत्र बनाना चाहते हैं उनसे मैं यही कहना चाहूंगी कि लिखो, खूब लिखो, हर बुलंदी को छुओ! बस मैं उन्हें यह भी चेतावनी देना चाहती हूँ कि लिखने में न ही ज्यादा पैसा है और न ही हर लेखक तुरंत प्रसिद्धि पाता है। किसी भी क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए लगातार मेहनत करनी होती है, खुद का हर बार नवीनीकरण करते रहना होता है और बहुत पढ़ना होता है!

होनहार बिरवान के होत चीकने पात...

हिंदुस्तान की ब्यूरोक्रेसी को लेकर हम सब के मन मस्तिष्क में कई नकारात्मक धारणाएं बन चुकी हैं।

लगभग हर सरकारी बाबू पर 'घूसखोर' का तमगा तो लगाया जा ही चुका है। आज का लेख एक ऐसे ऑफिसर को समर्पित जिसके मानवता के कृत्य ने लाखों लोगों का दिल जीत लिया है। तस्वीर उत्तर प्रदेश के हरदोई जिले के डी.एम. (जिलाधिकारी) पुलकित खरे और उनकी गोद में बैठे 6 वर्षीय भानू की है। एक शाम पुलकित किसी कार्यक्रम से थके मांदे लौटे तो ऑफिस के दरवाजे पर जिले के ही एक गाँव के प्रधान खड़े थे

'डीएम साहब' आपको किसी से मिलवाना है। केवल दो मिनट का समय चाहिये। प्रधान ने विनम्रतापूर्वक कहा। अभी थोड़ा व्यस्त हूँ। आप शाम में आ जाइयेगा, पुलकित ने जवाब दिया। प्रधान साँझ में फिर आ पहुंचे। दिन भर के काम और मीटिंग्स से झुंझलाये पुलकित खरे ने प्रधान से पूछा के आखिर ऐसा कौन खास व्यक्ति है जिसे आप मिलवाना चाहते हैं। खास नहीं साहब, बड़ा आम आदमी है। आदमी भी क्या बच्चा है। इतना कह कर प्रधान ने आवाज लगाई, अरे भानू। भीतर आ जा, 6 साल का बच्चा कुछ डरा सा,कुछ सहमा हुआ सा अपने पिता की उंगली थामे डीएम पुलकित खरे के समक्ष खड़ा था। प्रधान बोले साहब लड़का नहीं कम्प्यूटर है। क्या गिनती , क्या पहाड़े , क्या अंग्रेज़ी .... सब ऐसे याद है जैसे दिमाग नहीं कम्प्यूटर हो। डीएम साहब कभी प्रधान की ओर देखें तो बच्चे की ओर देखें। क्या नाम है तुम्हारा पुलकित ने बालक से पूछा। जी भानू बालक ने निसंकोच जवाब दिया।

'कहाँ तक पहाड़े याद हैं' पुलकित ने पूछा। 'जी 37 तक' भानू ने जवाब दिया। कुर्सी पर आराम से बैठे डीएम साहब की कमर एक दम सीधी हो गयी। 37 तक । अरे प्रधान जी कितनी उम्र बताई इसकी, जी 6 साल, प्रधान के बोलने से पहले भानू बोल पड़ा। 6 साल उम्र और 37 तक पहाड़े याद हैं। अच्छा बताओ 15 गुणा 6 कितना होगा ? जी नब्बे, 21 गुणा 18 कितना होगा ? जी 378, डीएम साहब। कठिन सवाल पूछिये, पास खड़े प्रधान ने कहा। 36 गुणा 14 कितना होगा? डीएम साहब ने कठिन सवाल दागा तो अगले ही क्षण उत्तर मिला, जी 504, फिर 13, 17, 23, 27, 33, 37 के पहाड़े एक सांस में सुना दिये। फिर एबीसीडी सुनाने लगा तो एक सांस में सुना दी।

प्रधान के चेहरे पर मुस्कान , भानू के चेहरे पर आत्मविश्वास और डीएम पुलकित खरे के चेहरे पर हैरानी थी। कौन है यह बच्चा? इस सवाल का जवाब ऐसा मिला के डीएम साहब का दिल पिघल गया। भानू के साथ उसके पिता खड़े थे जो हरदोई में ही एक रिक्शाचालक थे। खुद अनपढ़ यह पिता भानू को सरकारी स्कूल में दाख़िल भी करवा आया और जहाँ दो वक्त की रोटी भी नसीब नहीं होती वहां अपने बेटे को किताबें ला कर देता रहा। किताबों से भानू का लगाव ऐसा हुआ के उसने जितना पढ़ा उतना मस्तिष्क में एक कम्प्यूटर प्रोग्राम की तरह छप गया। बुद्धिमत्ता किसी की विरासत नहीं होती। जरूरी नहीं है के फाइव स्टार स्कूल में पढ़ने वाला बालक ही बुद्धिमान हो।

शेष पृष्ठ 18 पर

प्रेमचन्द की बाल कहानियां

प्रेमचन्द की बाल कहानियां उनके द्वारा लिखित मानसरोवर के एक से आठ भाग में मिलती हैं। उन्हाने बच्चों में पशु-पक्षी और प्रकृति के प्रति प्यार जाग्रत करने के लिए अनेक कहानियां लिखीं। जिनमें दो बैलों की कथा, कुत्ते की कहानी, जंगल की कहानियां, आत्माराम (गुरू तोते की), कजाकी आदि अन्य अनेक कहानियां बच्चों में खूब प्रचलित रही। बच्चे आज भी उन्हें बड़े चाव से सुनते-पढ़ते हैं।

आत्माराम

कहानी एक तोते की कहानी है जिसे महादेव सोनार पालता है। 'जब कभी महादेव के सम्मुख कोई अशान्तिदायक कष्ट उपस्थित होता तो वह अपने तोते की ओर देखकर पुकार उठता-'सत्त गुरुदत्त शिवदत्त दाता' इस मन्त्र को जपते ही उसके चित्त को पूर्ण शान्ति प्राप्त हो जाती थी।'[1] एक दिन कुछ शरारती बच्चे पिंजरे को खोल देते हैं। जिससे वह तोता पिंजरा छोड़ गांव में मुंडेर-मुंडेर उड़ता है और उसके पीछे महादेव सोनार भागता है। वह उसे मिल जाता है। तोते के कारण उसे धन मिलता है। एक दिन तोते को बिल्ली रूपी राहू ने ग्रास बना लिया। तोता गुरू रूप था। तोता तो आत्माराम था ही, महादेव की आत्मा भी तोते के कारण राममय हो जाने से वह भी आत्माराम बन गया। इसके अतिरिक्त नमक का दारोगा, बालक, अनाथ लड़की, अलग्योझा, गुल्ली डंडा, ईदगाह आदि कहानियां भी बच्चों के लिये आज भी प्रेरणादायक बनी हुई हैं। जिन्हें बालक आज भी पढ़ते हैं।

बालक

कहानी बालक के साहस की कहानी है जो समाज की कुरीतियों से लड़ता है।

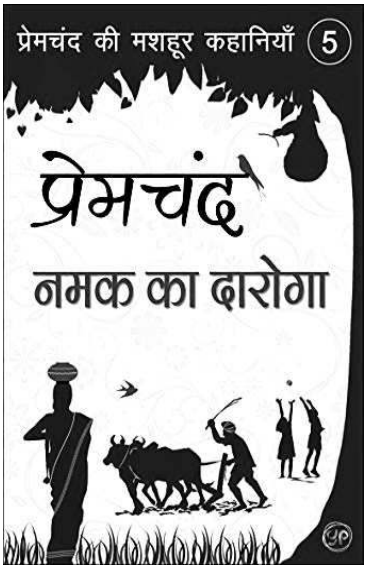

नमक का दारोगा

दारोगा वंशीधर की ईमानदारी तथा सामान बेचने वाले व्यापारी अलोपीदीन की मक्कारी की कहानी है।

अनाथ लड़की

कहानी बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ का नारा समाज में लगाती दिखाई देती है। कहानी में सेठ पुरुषोत्तमदास ने एक रोहिनी नाम की अनाथ लड़की को पाल पोश कर बड़ा ही नहीं किया बल्कि पढ़ा लिखाकर महान भी बनाया।' माँ की मुहब्बत में गहराई और आत्मिकता होती है जिसे बच्चे समझ नहीं सकते। बाप की मुहब्बत में खुशी और चाव होता है जिसे बच्चे समझते हैं।'[2]

अलग्योझा

कहानी में दूसरी मां के आते ही रघु का बचपन बड़ों के कार्य करने में दम तोड़ता दिखाई दे रहा है। 'रघु की उम्र उस समय केवल दस वर्ष की थी। चैन से गांव में गुल्ली डंडा खेलता फिरता था। मां के आते ही चक्की में जुतना पड़ा। गोबर रघु निकालता, बैलों को सानी रघु देता। रघु ही जूठे बरतन माँजता।'[3]

गुल्ली डंडा

कहानी बच्चो में भारतीय खेलों के प्रति विश्वास बनाये रखती है।

ईदगाह

कहानी दादी पोते की कहानी है। जो गरीबी में एक दूसरे की मदद करते हैं। दादी अमीना के हाथ तवे पर रोटी बनाते समय जलते थे। यह बालक हामिद से देखा न जाता था। जिसके कारण वह ईद के मेले में बड़ों की तरह अपनी दादी के लिये चिमटा खरीदकर लाता है। वह अपने बचपन को छोड़ बडप्पन को दिखाता है। दादी पोते के एक दूसरे के प्रति स्नेह और आदर को यहां दिखाया गया है।

अमीना नाम की एक वृद्धा अपने पोते हामिद के साथ एक गांव में रहती थी। हामिद चार पांच साल का गरीब सूरत दुबला पतला लड़का था। जिसका बाप हैजे की भेंट हो गया और मां भी एक दिन मर गयी। अब हामिद अपनी बूढ़ी दादी अमीना की गोद में सोता है और उतना ही प्रसन्न है। आशा तो बड़ी चीज है और फिर बच्चों की आशा! उनकी कल्पना तो राई का पर्वत बना लेती हैं। हामिद के पांव में जूते नहीं हैं, सिर पर एक पुरानी टोपी है, जिसका

गोट काला पड़ गया है, फिर भी वह प्रसन्न है। जब उसके अब्बाजान थैलियां और अम्मीजान नियामतें लेकर आयेंगी तो वह दिल के अरमान निकाल लेगा।

अभागिन अमीना अपनी कोठरी में बैठी रो रही है। आज ईद का दिन और उसके घर में दाना नहीं। 'इस अंधकार और निराशा में वह डूबी जा रही थी किसने बुलाया था इस निगोड़ी ईद को। इस घर में उसका काम नहीं है लेकिन हामिद! उसे किसी के मरने जीने से क्या मतलब उसके अन्दर प्रकाश है, बाहर आशा। विपत्ति अपना सारा दल बल लेकर आये, हामिद की आनन्द भरी चितवन उसका विध्वंस कर देगी।'[4] हामिद के बाप अमीना के सिवा और कौन है। फहीमन के कपड़े सिलने पर। आठ आने पैसे मिले थे। उसमें से तीन पैसे हामिद की जेब में और पाँच अमीना ने अपने बटवे में रख लिए। साल भर का त्यौहार है। हामिद बालक होते हुए भी अत्यन्त समझदार है वह केवल तीन पैसे लेकर ईदगाह में मेला देखने जाता है। वहां की चमक-दमक देखकर भी उसका मन विचलित नहीं होता। वह न मिठाई खरीदता है न खिलौने। वह तीन पैसों में अपनी दादी के लिए एक चिमटा खरीद लाता है।

इस कहानी के प्रभाव के सम्बन्ध में प्रेमचन्द लिखते हैं- 'अब मियाँ हामिद का हाल सुनिए। अमीना उसकी आवाज सुनते ही दौड़ी और उसे गोद में उठाकर प्यार करने लगी। सहसा उसके हाथ में चिमटा देखकर वह चौंकी।

यह चिमटा कहाँ था
मैंने मोल लिया है।
कै पैसे में
तीन पैसे दिये।

अमीना ने छाती पीट ली। यह कैसा बेसमझ लड़का है दो पहर हुआ कुछ खाया न पिया। लाया क्या यह चिमटा। सारे मेले में तुझे और कोई चीज न मिली जो यह लोहे का चिमटा उठा लाया।

हामिद ने अपराधी भाव से कहा- तुम्हारी उँगलियाँ तवे से जल जाती थीं, इसलिए मैंने इसे ले लिया।[5]

इस प्रकार दादी और पोते ने कम पैसों मे प्रसन्नतापूर्वक ईद का त्यौहार मना लिया । यही इस कहानी का प्रभाव है। इस प्रकार 'प्रेमचन्द की बाल कहानियां' आज भी बच्चों में प्रचलित हैं।

संदर्भ -

1. मानसरोवर (भाग - 7)-आत्माराम।
2. गुप्त धन (भाग-1)-अनाथ लड़की-पृ.126-127
3. मानसरोवर (भाग-1)-अलग्योझा।
4-5. वही(भाग-1)-ईदगाह पृ.34-36।

डॉ. महेश चंद
स्वतंत्र लेखक

क्रमशः पृष्ठ 16 से

देश के अधिक्तर क्लास 1 ऑफिसर डॉक्टर और इंजिनीयर्स सरकारी स्कूल्स के पढ़े होते हैं। भानू उन विलक्षण बुद्धि के प्राणियों में से एक था। परंतु बुद्धि और प्रतिभा किस काम की थी जब पिता के पास बेटे को पढ़ाने के पैसे ही नहीं थे। एक रिक्शाचालक जो दो वक्त की रोटी को मोहताज़ था वह अपने बच्चे के स्वर्णिम भविष्य की कल्पना कैसे कर सकता था। अद्भुत प्रतिभा थी पर उसे निखारने पर आने वाली लागत का इंतज़ाम नहीं था। बिना बताये डीएम साहब सब समझ चुके थे। फिर जो हुआ उसने इस अफ़सर और अफसरशाही के प्रति धारणा बदल दी। पुलकित ने भानू को गोद में उठाया और सामने खड़े उसके पिता से कहा अब यह बच्चा पढ़ेगा। जब तक चाहेगा पढ़ेगा और इसकी पढ़ाई पर होने वाले खर्च की एक एक पाई की ज़िम्मेवारी मैं लेता हूँ। पढ़ाई पर जो भी खर्च होगा उसकी चिंता अब आपकी नहीं मेरी है। जब तक यह पढ़ेगा फीस और अन्य खर्च मैं उठाऊंगा। सामने हाथ जोड़े भानू के पिता खड़े थे और एक विलक्षण बुद्धि के प्राणी की प्रतिभा को निखारने के ज़िम्मा लेने वाले डीएम की आंखों में नमी साफ देखी जा सकती थी। पुलकित एक बच्चे के सुनहरे भविष्य की नींव रख चुके थे जिससे अभी वह कुछ क्षण पहले ही मिले थे। हम हर प्रोफेशन को लेकर कुछ न कुछ धारणा बना लेते हैं। मानता हूं बुराई का बोलबाला है परंतु दुनिया मे आज भी बेहतरीन लोग बराबर के अनुपात में मौजूद हैं। या फिर दूसरे शब्दों में कहूँ तो हम सब मे एक उत्कृष्ट और बेहतरीन व्यक्ति मौजूद है। बस उसे पहचानने की देर है।

रचित सतीजा
पानीपत हरियाणा

बाल कविताएं

आजाद भगत सिंह

आजाद भगत ने हुंकारा
अंग्रेजों को यूं ललकारा
जय भारत का बोलो नारा
दे दो हिन्दुस्तान हमारा

भगत सिंह का चेहरा देखो
मकसद उनका गहरा देखो
टोपी, मूंछें जज्बा देखो
हिम्मत वाला सच्चा देखो

अंग्रेजों ने वादे तोड़े
लेके चलते हाथी, घोड़े
जुल्म नहीं हैं इनके थोड़े
कौन भला जो राहे मोड़े

हर बात हुई संगीनों पर
खून गिरा रोज जमीनों पर
नाज करें वीर जवानों पर
जो गोली झेलें सीनों पर

सावन लगते फांसी झूले
कहते-कहते फांसी झूले
कभी न मरते फांसी झूले
हंसते हंसते फांसी झूले

पेड़

तरह-तरह के पेड़ हमारे
उनमें गुण है कितने सारे
जीवन जिन्दा पेड़ सहारे
पेड़ों को हैं हम प्यारे

खट्टा-मीठा स्वाद दिलाता
चटनी, अचार रूप दिखाता
आम फलों में पहले आता
सबका राजा यह कहलाता

कड़वे गुण की तो खान यही
औषधियों में तो जान यही
शुद्ध हवा की तो शान यही
पेड़ नीम की पहचान यही

आक्सीजन से जीवन देते
कार्बन सारा ये हर लेते
मौन सदा ही दिखते रहते
कभी किसी से कुछ ना कहते

बगिया जंगल उगते रहते
जगह-जगह पर हंसते रहते
प्यारे-प्यारे लगते रहते
हर मौसम में खिलते रहते

बच्चों यह रोज सिखाओगे
पेड़ों को खूब लगाओगे
नुकसान नहीं पहुँचाओगे
तब इनसे सुख को पाओगे।

बाघ

राष्ट्र पशु है बाघ हमारा
आकर्षक यह लगता प्यारा
लेता नहीं कोई सहारा
जीता है यह पल को सारा

खेलें घूमें मस्ती करता
सेबीली आवाजें करता
जो भी देखे इनसे डरता
हिम्मत से यह सब कुछ करता

भव्य दिखे ये सुन्दर प्राणी
दमखम रखता अन्दर प्राणी
अपनी इच्छा चलता प्राणी
जंगल-जंगल बसता प्राणी

रहता पीले रंगों वाला
आक्रमकता फुर्ती वाला
धारी का है रंग निराला
साहस शक्ति रखने वाला

कभी नहीं यह डरना सीखें
गीदड़-सा ना मरना सीखे
दुश्मन को यह हरना सीखे
राज सभी पर करना सीखे।

डॉ. प्रीति प्रवीण खरे
भोपाल, म.प्र.

दीप पर्व की दो कवितायें

(1)

खील- बताशे, धूम- धड़ाके
आई दिवाली ले के साके .

रानी, बबलू जल्दी आओ
चलें मिठाई, पेड़े लाएं ,
रंग-रंगोली बना- बना कर
सुंदर हम घर- द्वार सजाएं.
अपनी खुशियां सबमें बांटें
करे ना कोई आज भी फांके.

ढेर मिठाई के ललचायें
लेकिन पेट का कहना मानें,
केवल मस्ती में ना रहें हम
दीवाली की कथा भी जानें,
पूजा करके दीप जलाएं
हल्ले वाले न चलाएं पटाखे.

(2)

ज्योति धरा से अंबर तक पहुंचाएं
आओ हम ऐसे दीप जलाएं

अनबन- झगड़े जो बिसरा दें
झिलमिल- झिलमिल प्यार सजा दें,
घर-घर जो प्रकाश फैलाएं
आओ हम ऐसे दीप जलाएं .

पूजन, अर्चन, आराधना हो
भेद- भाव हृदयों से दूर हो,
मन का अन्धकार मिटायें
आओ हम ऐसे दीप जलाएं.

नेह दीप हर द्वार सजाएं
प्रमुदित मन से मंगल गायें,
जग को नई राह दिखलायें
आओ हम ऐसे दीप जलाएं।

प्रीता व्यास
न्यूजीलैंड

अगर मैं तितली होती

दीप्तिमान सूर्य-रश्मियों से
सतरंगी स्वप्नों को सजाते हुए,
काश! अगर मैं तितली होती तो,
जीवन का सारा संताप हर
सुनहरी यादों की रोशनी से
सबके जीवन को आलोकित कर देती।

मैं अपने रंग-बिरंगे पंखों की
सुंदरता से
संपूर्ण सृष्टि को रंग देती।
अगर मैं तितली होती तो,
नदी-पहाड़-झरने-गाँव-नगर
चतुर्दिक
अलौकिक सौंदर्य की अनुपम
छटा बिखेर देती।

अगर मैं तितली होती तो,
सबकी उदास आँखों में
अपनी नन्हीं-नन्हीं आँखों की
मुस्कान भर देती।
ठीक उसी तरह, जिस तरह
मैं फूलों का रसपान करते हुए
चिर आनंद में लीन रहा करती हूँ।

अपराजिता आनंद
आरा (बिहार)

संस्कार

जैसे होंगे न संस्कार
वैसा ही होगा जीवन

उठकर प्रतिदिन सुबह सुबह
करो माता-पिता का वंदन

भगवान समान ही जान
नित करो अभिनंदन

करो काम नियत समय से
आदत ऐसी पड़ जाये

छूटे न कल पर कुछ भी
सब आज निबट ही जाये

जल्दी उठना जल्दी सोना
जीवन के अद्‌भुत गुण

रोज नहाना और रहना साफ
दूर रहे फिर सब अवगुण

हाल तेरा जबड्ड था बिगड़ा
फूट-फूट कर रोये थे

तुझे सुलाकर सूखे में
खुद गीले में सोये थे

जीवन का ये ध्येय बनाओ
बात बड़ों की मानना

जीवन सुखमय हो जायेगा
खुद को खुशकिस्मत मानना

बात बहुत छोटी है
काम आती आजीवन

जैसे होंगे न संस्कार
वैसा ही होगा जीवन
जैसे होंगे न संस्कार
वैसा ही होगा जीवन।

प्यारे-प्यारे पेड़ हमारे

प्यारे-प्यारे पेड़ हमारे
न्यारे-न्यारे पेड़

देखो कैसे तन जाते हैं
लंबे होने पे ये रुक जाते हैं
फल जब इन पे लगते हैं
प्रेम से ये झुक जाते हैं

प्यारे-प्यारे पेड़ हमारे
न्यारे-न्यारे पेड़

कुछ हरे-भरे है होते
कुछ सूखे रह जाते है
काटा जाता है जब इनको
हर दर्द ये सह जाते है

प्यारे-प्यारे पेड़ हमारे
न्यारे-न्यारे पेड़

रूप अलग है रंग अलग है
भिन्न-भिन्न ये रहते हैं
भेदभाव कभी न करना
हमसे भी ये कहते हैं

प्यारे-प्यारे पेड़ हमारे
न्यारे-न्यारे पेड़

हमको भी पानी देते रहना
खुद नहाते हो जैसे
हमको भी चाहना तुम ऐसे
बच्चों को चाहते हो जैसे

प्यारे-प्यारे पेड़ तुम्हारे
हम न्यारे-न्यारे पेड़।

प्राप्ति सरीन
आगरा (उ.प्र.)

अच्छे बच्चे

अनिल खुबानी

कितने सच्चे कितने अच्छे
होते हैं ये प्यारे-प्यारे बच्चे
कोयल सी है इनकी बोली
फूलों सी है इनकी मुस्कान
रब से भी न्यारे होते हैं बच्चे
भेदभाव नहीं कोई रखते बच्चे
फूलों से भी नाजुक होते बच्चे
निडर नटखट चंचल ये बच्चे
सपनीले रंगों का मजा लेते बच्चे
जानते नहीं कोई छूआछूत बच्चे
न्यारे मतवाले होते हैं ये बच्चे
ऊंच-नीच नहीं समझते ये बच्चे
पवित्र जल से होते हैं ये बच्चे
सख्ती करी तो रुठ जायेंगे बच्चे
छुई-मुई के समान होते हैं ये बच्चे
नैनो में बसा संसार
चुलबुल इनका अभिमान
गीली माटी से होते हैं ये बच्चे
माँगते नहीं सोना - चाँदी
लालच से अनजान
स्नेह के भूखे होते हैं ये बच्चे
करुणा के सागर
प्रेम का भण्डार
मनमोहन से होते हैं ये बच्चे
इन्हें न बांध सके कोई बंधन
रंग-बिरंगी पतंग से उड़ते हैं बच्चे
चंचल मन के होते है ये बच्चे
जिधर मिले प्रीत की धूप
उधर मुड़ जाते हैं ये बच्चे
सूरजमूखी से होते हैं ये बच्चे
न रंगों इन्हें कभी मैले रंगों से
माला के मोती से होते हैं ये बच्चे।

शिल्पी कुमारी
उदयपुर (राजस्थान)

दादी नानी की ये कहानी
छोड़ो मम्मी हुई पुरानी
बोलो चाँद चमकता क्यों है
जुगनू आखिर जलता क्यों है
तारे कैसे टिक पाते हैं
क्यों न गगन से गिर जाते हैं
डाकिया माना खत पहुंचाता
फैक्स है कैसे पर आ जाता
कैसे बिजली रोशनी देती
होती कैसे चाय की खेती
ये सब माँ तुम मुझे बताओ
वरना ऐसे हमें सुलाओ

जियाउर रहमान जाफरी
बिहार

तितली रानी

तितली रानी -तितली रानी
तुम कहां से आती हो?
रंग-बिरंगे पंखों वाली,
सबके मन को भाती हो।
लाल-हरे और नीले- पीले
पंख तुम्हारे प्यारे-प्यारे
फूलों का रस पीने वाली रंग तुम्हारे
न्यारे-न्यारे
कभी यहां और कभी वहां ,
तुम फुर्र से उड़ जाती हो ।
तितली रानी -तितली रानी
तुम कहां से आती हो?
कोमल कोमल पंखों वाली
कौन देश से आती हो ?
सबके मन को भाने वाली,
तुम फुर्र से उड़ जाती हो।
कभी फूल पर,
कभी पेड़ पर,
कभी कली पर जाती हो।
तितली रानी -तितली रानी
तुम कहां से आती हो?

साधना शुक्ला

जीवन से जोड़ना सिखाता बचपन

बचपन एक खूबसूरत धरोहर की तरह होता है, हर इन्सान की जिन्दगी में। मेरा बचपन भी पिता की उंगली पकड़ के बड़ा हुआ। सुबह का सुनहला सूरज आँखों के झरोखों से होता हुआ आसमान की ऊँचाइया छुआ करता था। सड़क के इस पार निचले तल पर चक्की बाजार और उसके ऊपर हमारा घर, जहाँ से सुबह से शाम तक की सारी गतिविधियाँ, वाहनों का आवागमन, सब्जी, फल, मूंगफली, शकरकन्द, भल्ले-पापड़ी की तबे पर टन-टन की आवाज करती रेहड़ी और कुल्फी की घंटी बजाती ठेल और भी ना जाने कितनी ही आवाजें गुलजार हुआ करती थीं। बेचने वाले विचित्र सम्बोधन से आवाजें लगाया करते थे, जैसे बेकडाई का हलवा (भुनी शकरकन्द), इलाहबादी पेड़े (अमरूद)। सड़क के उस पार बहती थी नदी और उसके किनारे मन्दिर हुआ करते थे। गर्मियों में सूरज उगने से पहले अपने थैले में कपड़े लेकर पहुँच जाते थे नहाने और कमर से ऊपर तक जहाँ पर पानी होता था, वहाँ डुबकी लगाकर आपस में और बच्चों के साथ पानी उलीच कर घंटों खेला करते थे। और फिर कपड़ों में ढेर सारी बालू लपेट कर घर आते थे। अंगीठी के लिए कोयला तोड़ना, फिर उसमें पहले कच्चा कोयला और उसके ऊपर पत्थर का कोयला डालकर नीचे से एक गोबर की कन्डी पर मिट्टी का तेल डाल कर जलाना और एक पंखे से हवा करते हुए गुनगुनाना सचमुच एक अनोखा अनुभव होता था।

शुरुआती दिनों में लकड़ी की पट्टी पर घोंटा लगाना और दवात में खड़िया घोलना तथा सरकन्डे की कलम छील कर स्कूल की तैयारी करते थे और दवात को धागे की मदद से पट्टी सिर लटका लेते थे और खटर-पटर करती दवात आत्मिक सुख देती थी। सरस्वती

वन्दना कुछ ऐसे सुनाई पड़ती थी, 'माँ सर सती वर दे' यानी कि मास्टर, सती वर दे।'

माँ कहतीं ये पढ़ाई होती है स्कूल में? वह कस के दो चोटी बना देतीं और कानों के पास दोहरी कर रिबन से बांध देतीं। घेरदार फ्रॉक अपने हाथ से सिलकर पहनातीं, तब मशीन नहीं आयी थी घर में।

पड़ोस के सभी आंगन मिले हुए थे, किसी का कुछ गोपनीय नहीं था, किसके घर आम आये हैं किसके घर तरबूज, बच्चों का सबके संग साझा था। जाड़े की दुपहरी, सर्दी की शामें आँगन में पड़ी चारपाई पर गुलजार हुआ करती थीं। कंचे, पतंगें, लंगड़ी टांग, गुल्ली-डंडा, टप्पा-टप्पा कहीं भी किसी के आँगन और छत पर खेलते थे। गर्मियों में छत पर छिड़काव कर चारपाई बिछ जातीं तो कहानी किस्से सुना करते। सबके मामा अपने मामा सबके चाचा अपने चाचा। परायेपन का नाम निशान नहीं। होली-दिवाली के पकवान एक दूसरे के साथ मिलकर बनाते और आपस में आदान-प्रदान भी करते।

मीरा परिहार 'मंजरी'
आगरा

बचपन के दिन भी क्या दिन थे

सबसे छोटी होने के कारण मैं सबकी लाड़ली और शैतान भी बहुत थी। सारे दिन इधर से उधर भागना, फैलाना और फिर मार के ड़र से छिप जाना.. मेरा यही काम था।

एक बार की बात है.. घर में सभी दूरदर्शन पर कार्यक्रम देख रहे थे ...सीता-हनुमान संवाद चल रहा था।हनुमान जी ने बदन पर सिंदूर क्यों और कैसे धारण की...सभी ध्यान मग्न थे। मैंने कार्यक्रम पूरा नहीं देखा और उठकर भीतर कमरे में चली गई।

पहले तो काफी देर तक सोचती रही अपने नये कारनामे को.. फिर उसे अंजाम देने हेतु..मम्मी की सिंदूर की डिब्बी खोली और स्वयं पर मलने लगी। कुछ देर बाद बाहर आकर बोली- देखो, मम्मी! मैं भी हनुमानजी लग रही हूं, ना! उसकी इस मासूमियत, सहज भाव और भोलेपन के कारण सभी अवाक रह गए। डर था कि पिटाई न हो जाये, परंतु किसी ने कुछ भी नहीं कहा। आज भी यह घटना जब भी याद आती है तो खुद पर ही हँस पड़ती हूँ।

लक्षिता गोयल
जयपुर

गतांक से आगे....

उड़ती चील का अण्डा

''उड़ती चील का अण्डा'' एक मुहावरा है जो ग्राम्यांचल में प्रचलित है। किंवदन्ती यह है कि 'चील' उड़ते-उड़ते ही अण्डा देती है। उसका अण्डा भूमि परआकर असहायावस्था में गिरता है और बिना मां के ही उसका जीवन अनिश्चय की स्थिति में पलता और चलता है। वह जीवित भी रहेगा या नहीं, कुछ कहा नहीं जा सकता। इसी प्रकार जब किसी शिशु की माता उसके बचपन में ही अपनी संतान को बेसहारा छोड़कर स्वर्ग सिधार जाती है, तो ऐसे शिशु को समाज ''उड़ती चील का अण्डा'' कह-कहकर अपनी संवेदना व्यक्त करता है।

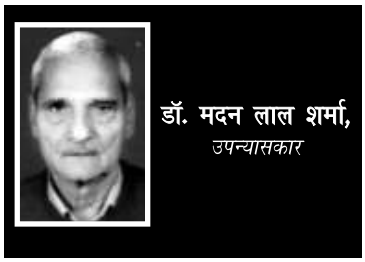

डॉ. मदन लाल शर्मा,
उपन्यासकार

सरस्वती देवी कर्मठ और सहिष्णु के साथ विदुषी भी थी। वे काशी में रहकर विवाह से पूर्व बस में बैठकर स्कूल जाती थीं। वहीं से उन्होंने शिक्षा ग्रहण की थी। वे रामायाण-गीता-भागवत का पारायण करती थीं। और कभी-कभी तो गांव की अनपढ़ स्त्रियों को पढ़ातीं और उपदेश भी देती थीं।

सस्वती देवी पति परायणा थीं। वेपति सेवा का भी सदा ध्यान रखती थीं। परिवर के पालन में कभी चूक नहीं करती थीं। गणेश उनका इकलौता पुत्र था और विद्यावती इकलौती बहू। इन दोनों का वे विशेष खयाल करती थीं और बहू की कर्मठता, सेवा-भावना, सादगी, सदाचार और शालीनता पर वे मुग्ध थीं। हर समय बहू की सहायता करती रही थीं। कभी कटु-वचन नहीं बोलती थीं। बहू को जली-कटी नहीं सुनाती थीं। हमेशा बेटी विद्या कहकर ही सम्बोधन करती थीं। बहू के मायकेवालों की खूब खातिरदारी करती थीं। कभी किसी से कुछ मांगती नहीं थीं। भिखारी को भीख देना अपना अनिवार्य धर्म समझती थीं। छाछदान की तो वे व्यवस्थापक ही थीं। उनकी तीन बेटियां थी। वे अपनी ससुराल में सुखी थीं। सरस्वती-बेटियों को ससुराल वालों को भी दान-मान से संतुष्ट रखती थीं। वे धर्म की ध्वजा मानी जाती थीं।

सरस्वती देवी अपनी बहू को बहुत प्या करती थीं। वे सदा उसे अपने नेत्रों की छाया में ही रखती थीं। बहू को जी तोड़ का करते देखकर उनका हृदय दहल उठता था। इसी कारण वे बहू के काम में अतिशय का भार को हल्का करने के लिए उसके काम में हाथ बंटाने का प्रयास करती थीं। बरहे के काम से मुक्त करने के लिए एक महनती रखने के प्रयास में भी थीं। परन्तु विद्यावती उन्हें यह सब नहीं करने देती थी। वह कहती थी-'मांजी! आपने बहुत कुछ कर लिया है। आपने महलों से आकर झोंपड़ी को संभाला था। अब आपकी वृद्धावस्था है। मैं तो सदा से रही ही झोंपड़ी में हूं। अपने पीहर में तो मैं बरहे का ही काम करती थी। मुझे तो पहले से ही अभ्यास है। मेरे लिए यह काम हवा है। आप और पिताजी केवल मनोज और मोहन को संभाल हें। बाकी मैं कर लूंगी। यदि मेरे काम में आपको कहीं भी कमीं या शिथिला दिखाई दे तो आप बस मुझे बता दें। मैं फिर ऐसी गलती नहीं करूंगी।'

बहू के इस शालीनता पूर्ण व्यवहार से सासू गदगद हो जाती थीं और भगवान् से प्रार्थना करती थीं कि-हे प्रभू! मेरी बहू तो 'सीता' है। इसकी मेरे सामने कभी आंख भी न दुखें। यदि इस बेचारी की कोई गलती भी देखें तो उसका दण्ड आप मुझे दे लें। परन्तु मेरी बहू पर कभी कोई संकट न आने दें। **...क्रमशः अगले अंक में**

वर्ल्ड साईट डे पर ब्लाईन्ड वॉक डे का आयोजन

जयपुर । केस्टलीनो आई फाउन्डेशन द्वारा वर्ल्ड साईट डे पर ब्लाईन्ड वॉक डे का आयोजन किया गया। इस अवसर पर लगभग 1,000 स्कूली के बच्चों ने अपनी आँख पर काली पट्टी बांध कर धुलेश्वर गार्डन से फुलगेशिप चर्च तक वाक किया। केस्टलीनो आई फाउन्डेशन के चेयरमैन माईकल केस्टलीनो ने बताया कि इस रैली के आयोजन का उद्देश्य लोगों को आई केयर के प्रति जागरुक करना है। इस रैली में लोगों ने आई डोनेशन का संकल्प लिया। इस अवसर पर फादर ओसवाल्ड जे लूईस, फादर डॉ. जारज कन्नाथनम, संजय अग्रवाल, नेमीचन्द यादव, अंशुल जैन, मुदित विलियम्स, मनोज अग्रवाल, ग्लोरिया केस्टलीनो, रोविना केस्टलीनो, बृजेश सिन्हा, विमल चन्द, कमल आदि गणमान्य लोग उपस्थित थे।

शिक्षा की अलख जगाता

केन्द्रीय विद्यालय नंबर 2

बच्चों का होना जीवन में भगवान का होना और जब भगवान साथ में मुस्कराता रहे तो इससे बढ़िया जीवन की शुरुआत नहीं हो सकती है।

माही संदेश के लिए अनुराग सोनी ने आर्मी स्टेशन जयपुर स्थित केन्द्रीय विद्यालय नंबर 2 में प्राचार्य उमाशंकर विजय से बाल विशेषांक के बारे में बातचीत कर विद्यालय के बारे में जानकारी ली।

यहां आर्मी स्टेशन स्थित इस केन्द्रीय विद्यालय की स्थापना वर्ष 1985 में की गई, इस समय इस विद्यालय में कुल 3070 बच्चे अध्ययनरत हैं। इन बच्चों को शिक्षित करने की जिम्मेदारी यहां नियुक्त कुल 105 शिक्षकों के मजबूत कंधों पर है।

बच्चों के विकास और बौद्धिक क्षमता आज का बचपन और पूर्व काल के बचपन को लेकर विद्यालय प्राचार्य उमाशंकर से विस्तृत बातचीत हुई, इस बातचीत में कई महत्वपूर्ण बातें निकलकर सामने आईं।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में आप बच्चों की प्रतिभा को किस नजर से देखते हैं?

पहले सीमित संसाधन थे जबकि आज संसाधन असीमित हैं, बौद्धिक क्षमता का विकास पहले की अपेक्षा बढ़ा है न कि सीमित हुआ है, पहले 80 के दौर में जिस दौड़ को बच्चा 20 सेकंड में पूरी कर रहा था आज उसी दौड़ को बच्चा 15 सेकंड में पूरी कर रहा है। प्राचीन रिकॉर्ड टूट रहे हैं, यह इस बात का संकेत है कि बच्चों के बौद्धिक विकास में पहले की अपेक्षा अधिक वृद्धि हुई है। आज बच्चे 100 प्रतिशत मार्क लेकर आ रहे हैं जो कि पहले बहुत कम प्रतिशत तक ही प्राप्तांक सीमित हुआ करते थे।

आज बच्चों को सोशल मीडिया ने जकड़ रखा है, इस बारे में आप क्या कहना चाहेंगे?

इसका सीधा असर संयुक्त परिवारों के विघटन से है और माता-पिता के पास अपने बच्चों के लिए समय का अभाव होना दूसरा सबसे बड़ा कारण है, पहले एक बच्चे पर 6 निगाहें रहतीं थी, दादा-दादी, पापा-मम्मी, चाचा-चाची आदि लेकिन आजकल बढ़ते एकल परिवार के चलन से माता-पिता की निगाहों से भी मासूम बचपन ओझल हुआ दिखाई देता है। आज छोटी कक्षा के बच्चे भी माता-पिता से इंटरनेट यूज करने के लिए फोन मांगते हैं और फेसबुक आदि सोशल मीडिया एप पर समय बिताते हैं जो कि बच्चों के लिए घातक सिद्ध हो रहा है। इस ओर भी माता-पिता को जागरूकता दिखाने की बहुत जरूरत है।

आज के दौर में शिक्षा का व्यापक स्तर पर बाजारीकरण हुआ है, इस बारे में आपके विचार क्या हैं?

शिक्षा के बाजारीकरण की जो आपने बात की है इसमें कहीं हद तक माता-पिता की असीमित अपेक्षाएं भी शामिल हैं, बढ़ता पैसा समय की कमी इसके सबसे महत्वपूर्ण कारण हैं, इसका उदाहरण निजी स्कूल हैं जहां बात बात के लिए बच्चों से पैसा मांगा जाता है, जो किताब एनसीईआरटी महज 100 रुपए से कम में उपलब्ध कराती हैं ठीक उसी पैटर्न की किताब अलग ब्रांड नेम के साथ प्राइवेट स्कूल्स दो से तीन गुनी कीमत पर उपलब्ध करवा रहे हैं।

केन्द्रीय विद्यालय नंबर 2 आज शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी नाम है, यहां पढ़ाई और बच्चों के लिए क्या गतिविधियों का आयोजन किया जाता है।

हमारा मुख्य उद्देश्य यह है कि बच्चों के शारीरिक विकास के साथ ही मानसिक विकास को भी मजबूत बनाना है। पढ़ाई के साथ साथ बच्चों के लिए समय समय पर खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है खेलकूद के साथ पढ़ाई में बच्चे हमेशा आगे रहे हैं, वर्ष 2017-2018 में 12वीं कक्षा की छात्रा निहारिक जैन ने मैरिट लिस्ट में दूसरा स्थान प्राप्त किया। हमारा स्कूल उत्कृष्ट और प्रतिष्ठित पेशेवरों के साथ नई ऊंचाइयों को स्केल कर रहा है जिसमें फुटबॉल, बास्केटबाल, क्रिकेट, टेबल टेनिस और ड्रम, गिटार, की-बोर्ड, जाज, नृत्य और रंग-मंच के लिए शतरंज जैसी सह-पाठ्यचर्या गतिविधियों की एक श्रृंखला में हमारे बच्चों को प्रशिक्षण दिया जाता है।

माही संदेश के बाल विशेषांक के लिए आपके शब्द...

यह बाल विशेषांक बच्चों के लिए बेहद उपयोगी है, इसमें प्रयुक्त सामग्री बच्चों के पढ़ने योग्य व जीवन में उतारने और मनन करने के काबिल है, संपूर्ण माही संदेश परिवार को मेरी असीमित शुभकामनाएं।

ज्ञान का प्रकाश फैलाता ज्ञान विहार

करूणा, दया, सेवाभावी, आदर्श व्यक्तित्व के धनी स्व. सुरेश शर्मा द्वारा 1994 में जो शिक्षा का दीप प्रज्ज्वलित किया गया था, जो पौधा रोपा गया था, वह आज शिक्षा की सुगंध से अपनी अलग पहचान बनाकर सुदूर तक अमिट छाप छोड़ रहा है।

ज्ञान विहार विद्यालय हरियाली से आच्छादित प्रदूषण मुक्त वातावरण में शुरू होकर आज सभी आयामों में वृद्धि का अनुभव करने के लिए प्रत्येक बच्चे को अवसर प्रदान करता है।

ज्ञान विहार विद्यालय जो बाल भवन से लेकर बारहवीं कक्षा तक है, सभी सुविधाओं से सुसज्जित कक्षाओं का विशाल व प्राकृतिक प्रकाश से भरे कमरे, डिजिटल लेब, कम्प्यूटर, गणित और विज्ञान जैसे विषयों के लिए एक उत्तम प्रयोगशाला है।

भव्य स्पोर्ट्स कॉम्पलेक्स विशाल ऑडिटोरियम, एक्टिविटी रूम्स, व्यवस्थित पुस्तकालय के साथ स्विमिंग पुल की सुविधा इसे भव्य और अधिक आकर्षक बनाते हैं। विशेष रूप से बनाए गए स्मार्ट क्लासेज, रिकॉर्डिंग स्टूडियो, इंडोर स्टेडियम, ब्लैकबोर्ड रेडियो एप, जिसके जरिए बच्चे अपनी पब्लिक स्पीकिंग का अभ्यास कर खुद को बेहकर स्पीकर बनाते हैं। ये सभी नायाब फीचर्स ज्ञान विहार स्कूल को शहर का सर्वोत्तम स्कूल बनाते हैं।

जयपुर शहर के प्रतिष्ठित स्कूल के प्रबंधक सुरेश ज्ञान विहार यूनिवर्सिटी के चेयरमैन सुनील शर्मा, चीफ मेंटर डॉ. सुधांशु शर्मा ज्ञान विहार स्कूल के डायरेक्टर कनिष्क शर्मा व प्रिंसीपल डॉ. ए.के. पांडेय का मानना है कि शिक्षा के साथ-साथ जीवन मूल्यों की गुणवत्ता में विकास ज्ञान विहार के उन्मुक्त वातावरण में ही संभव है। अपनत्व व ज्ञान से परिपूर्ण इस स्कूल में 60 शिक्षक शैक्षिक अनुभव से विद्यालय वातावरण के बच्चों में सर्वांगीण विकास के लिए सतत प्रयासरत रहते हैं।

अनुभवी अध्यापक, उत्कृष्ट खेल सुविधाएं यह स्पष्ट करती हैं कि बच्चों के समग्र विकास में शैक्षणिक गतिविधियों का संतुलन जरूरी है । मेरे ज्ञान विहार का माहौल अपनत्व से परिपूर्ण है ।

कोई भी नया विद्यार्थी जब यहां दाखिला लेता है तो डरा सहमा- सहमा होता है लेकिन यहां के शिक्षकों की ममता, वात्सल्य पूर्ण व्यवहार के वशीभूत हो वह सप्ताहभर में अपना परिवार मान उसमें रमने लगता है। शिक्षकों के लिए भी यह स्कूल उन्हें परिवार की तरह स्नेह व आदर देता है, इसीलिए हम ज्ञान विहार को परिवार का दर्जा देते हैं ।

तभी तो विद्यालय की एक बालिका अपने मन की भावनाओं को स्कूल मैगजीन 'आगाजग में इस तरह कह उठती है ---

'हरियाली संग स्वागत करता
मेरा ज्ञानविहार जब मन को
प्रेम, दया ,करुणा,
अपनत्व से स्पर्श करता
तो भावों में झूलते विषय
अंगीकार होकर कुलांचे भरते
मेरे आधार का विकास
शनैः शनैः सुदृढ़ होकर
मुझे तेज और विद्या से परिपूर्ण करते।'

- ज्ञान विहार विद्यालय में कक्षा 9 एवं 10 में विद्यार्थियों को एन.टी.एस.ई. एग्जाम के लिए निःशुल्क तैयारी अनुभवी अध्यापकों के द्वारा अतिरिक्त तौर पर कराई जाती है जिसका परिणाम भी सफल रहता है।
- विद्यालय में हर विषय से संबंधित विभिन्न गतिविधियां आयोजित की जाती है जिससे बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ता है- जैसे बच्चों को बायोलॉजिकल पार्क, हॉस्पिटल, अनाथालय, बैंक, राधा-कृष्ण लाइब्रेरी, जवाहर कला केंद्र, विभिन्न शैक्षणिक भ्रमण हेतु दूरदर्शन प्रश्नोत्तरी, बुक फेयर, करियर फेयर, एजुकेशनल टूर में ले जाकर

इनके व्यावहारिक ज्ञान में अभिवृद्धि की जाती है।

- ❖ विद्यालय में आयोजित विभिन्न आयोजन जैसे कविता वाचन, दोहा, श्लोक, इंग्लिश ऐसे राइटिंग, म्यूजिक, डांस, योगा, विभिन्न प्रकार के खेलों से संबंधित सह शैक्षणिक गतिविधियों को आयोजित कर विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया जाता है।
- ❖ विद्यालय में बच्चों को अपनी सांस्कृतिक विरासत से अवगत कराने के लिए विभिन्न त्योहारों और विशेष दिवस पर विशेष प्रार्थना सभा आयोजित होती हैं।
- ❖ यहाँ हर वर्ष जुलाई माह में आयोजित होने वाले इंटर स्कूल स्विमिंग कम्पीटिशन का पूरे जयपुर को इंतजार रहता है। इसमें 22 स्कूलों के करीब 400 विद्यार्थी भाग लेकर अपनी तैराकी कुशलता का परिचय देते हैं।
- ❖ राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी ज्ञान विहार अपना परचम लहरा चुका है।
- ❖ यहां की एक छात्रा मनस्वी शास्त्रीय नृत्य कत्थक में जापान जाकर ज्ञान विहार का मान बढ़ा कर आई है ।
- ❖ वहीं राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर खेलकूद, म्यूजिक व आर्ट में भी विद्यार्थियों ने अपना विशेष स्थान बनाया है ।
- ❖ यहां से अध्ययन कर चुके विद्यार्थी हर क्षेत्र जैसे मेडिकल, सिविल सेवा, इंजीनियरिंग, सी. ए., संगीत, डांस, पॉलिटिक्स, तकनीकी क्षेत्र आदि में भी अपनी सेवाएं दे रहे हैं।

एक विशेष बात जो उल्लेखनीय है कि नेशनल टेस्टिंग एजेंसी जो कि सारे राष्ट्रीय एग्जाम जैसे यू.जी.सी. नेट, नीट, जे.ई.ई. जैसे एग्जाम आयोजित करती है, एजेंसी ने देश के चुनिंदा स्कूलों में से जयपुर शहर में सिर्फ ज्ञान विहार को ही सेंटर के लिए चुना, जहां कोई भी बच्चा जो इन एग्जाम में अपीयर हो रहा है वह अपना रजिस्ट्रेशन करवाकर यहां टेस्ट प्रैक्टिस के लिए आ सकता है। यह सर्विस निःशुल्क है ।

इस तरह ज्ञान विद्यालय में बच्चों में ज्ञान की समझ विकसित करने, कक्षा-कक्ष प्रबंधन, प्रभावी छात्र शिक्षक संवाद एवं निर्देशों की उत्तमता व संरक्षित अध्यापन एवं सीखने पर जोर देने वाली गतिविधियों के साथ- साथ व्यावहारिक गतिविधियां भी इसे उत्तम बनाने में अपनी अहमियत रखती है ।

रेनू शर्मा
(हिंदी विभागाध्यक्ष)
ज्ञान विहार स्कूल

'माही संदेश' में विज्ञापन दें

एक स्वाभाविक प्रश्न जो मन में आता है कि आप 'माही संदेश' मासिक पत्रिका में विज्ञापन क्यों दें.....तो इसके लिए आपके पास बहुत से कारण हैं..जैसे,

वर्तमान में युवा पीढ़ी साहित्य की ओर बहुत तेजी से आकर्षित हो रही है और 'माही संदेश' पत्रिका में साहित्य, समाज और जीवन के विभिन्न पक्षों पर सर्वाधिक बल दिया गया है और इसका प्रकाशन अनुभवी साहित्यिक व्यक्तियों द्वारा किया जा रहा है जिससे युवा पीढ़ी तक आप सहज ही पहुंच सकते हैं।

हमारे साथ जुड़े विभिन्न सामाजिक संगठन एवं संस्थाओं, सरकारी कार्यालयों में 'माही संदेश' मासिक पत्रिका निरंतर पहुंच रही है। जिससे आपका विज्ञापन हर आयुवर्ग के व्यक्ति तक पहुंच पायेगा।

'माही संदेश' मासिक पत्रिका गुणवत्ता युक्त पाठ्य सामग्री को समेटे हुए हैं जिससे इसका एक व्यापक पाठक वर्ग है।

विभिन्न सामाजिक गतिविधियों के विशेष कवरेज के कारण निश्चित रूप से हमारे साथ आप भी शीघ्रता से निरन्तर आगे बढ़ेंगे ऐसा हमारा प्रयास और विश्वास है।

खोखले दावों के विपरीत वास्तविकता के धरातल पर हम आपका हमारे साथ जुड़ने पर स्वागत करते हैं।

'माही संदेश' मासिक पत्रिका विज्ञापन दर

पत्रिका का कवर पृष्ठ	₹ 50,000
सामने के कवर का आंतरिक पृष्ठ रंगीन	₹ 20,000
पीछे का कवर रंगीन	₹ 40,000
पीछे के कवर का आंतरिक पृष्ठ रंगीन	₹ 20,000
अंदर का सामान्य श्वेत श्याम पृष्ठ	₹ 6,100
अंदर का सामान्य श्वेत श्याम आधा पृष्ठ	₹ 3,100

संपादक
माही सन्देश
खाता संख्या
37802854186
IFSC: SBIN0032385
भारतीय स्टेट बैंक
शाखाः कनक विहार, हीरापुरा, जयपुर
पेटीएम-9887409303
दूरभाष- 9887409303

पॉप्पीन्स प्री प्राइमरी स्कूल

सुबह उठना, तैयार होकर स्कूल जाना और पढ़ाई करना ... उफ्फ् कुछ बच्चों के लिए सच में बड़ा बोरिंग काम होता है किन्तु कुछ स्कूल ऐसे भी हैं जहां बच्चे खुशी-खुशी जाना पसंद करते हैं।

पॉप्पीन्स प्री प्राइमरी स्कूल ऐसा ही एक स्कूल है। यह मानसरोवर के परमहंस मार्ग पर स्थित है। वर्ष 2014 से यह विद्यालय बच्चों के सुन्दर भविष्य के निर्माण हेतु निरंतर कटिबद्ध है। इसकी दो ब्रांचेज और भी हैं जो जगतपुरा और सिद्धार्थ नगर में हैं।

यह स्कूल 'लर्निंग इस फन' के ध्येय को लेकर चलता है। यहाँ तमाम शैक्षिक तथा रचनात्मक गतिविधियों द्वारा खेल - खेल में इस प्रकार शिक्षा दी जाती है कि बच्चे स्वयं अपने अभिभावक से स्कूल जाने की जिद करते हैं। कई बच्चे तो छुट्टी के दिन भी स्कूल जाना चाहते हैं। स्कूल के सहज एवं सुरक्षित वातावरण में बच्चे घर जैसा अपनत्वपूर्ण एहसास लिए भयमुक्त एवं तनावरहित हो अध्ययन करते हैं। उनके बौद्धिक, सामाजिक, मानसिक तथा शारीरिक विकास हेतु यहाँ समय-समय पर कई तरह की प्रतियोगिताएं, खेल-कूद एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं। साल के अंत में वार्षिकोत्सव भी होता है जिसका आयोजन बहुत भव्य पैमाने पर किया जाता है।

विद्यालय का इंफ्रास्ट्रक्चर अत्याधुनिक तथा बच्चों की सुरक्षा को ध्यान में रखकर बनाया गया है। कक्षाएं साफ-सुथरी, बड़ी एवं हवादार हैं। हर क्लास एक थीम पर आधारित है और उसी के अनुरूप उसकी दीवारों पर पेंट किया गया है। नन्हें विद्यार्थी दीवारों पर की गयी रंग-बिरंगी चित्रकारी देखकर बहुत खुश होते हैं। पीने के लिए स्वच्छ एवं शुद्ध जल की व्यवस्था है। कंप्यूटर लैब, डांस क्लासेस, लाइब्रेरी के साथ-साथ इंडोर और आउटडोर गेम्स की भी व्यवस्था है। स्कूल के निदेशक राहुल वर्मा, प्रधानाचार्य प्रभा शर्मा, समस्त शिक्षक तथा कर्मचारियों का व्यवहार अत्यंत सौहार्द्रपूर्ण है। सभी अपने दायित्व बखूबी व पूर्ण निष्ठा से निभाते हैं। विद्यार्थियों को योग्य एवं अनुभवी शिक्षकों द्वारा शिक्षा दी जाती है।

एक विद्यालय की सफलता इस बात में है कि बच्चे वहां जाने और पढ़ने की जिद करें। बच्चों को घर जैसा वातावरण देना ताकि वो सहज हो अध्ययन में रूचि ले सकें किसी भी विद्यालय का पहला लक्ष्य होना चाहिए। इसे पॉप्पीन्स प्री प्राइमरी स्कूल ने साकार कर दिखाया है और यही इसकी सफलता का प्रथम सोपान है।

उर्वशी चौधरी
अध्यापिका

बच्चे भावी जीवन में योग्य एवं कर्मठ नागरिक बनें, उनकी शिक्षा ऐसी हो जो एक स्वच्छंद तथा निर्भीक वातावरण में उनका सर्वांगीण विकास कर सके ताकि वे बड़े होकर देश, समाज और परिवार के उत्तरदायित्व को भलीभांति निभा सकें।

राहुल वर्मा
(निदेशक, पॉप्पीन्स प्री प्राइमरी स्कूल)

साल 1957 में आयोजित 'बाल फिल्म समारोह' के अंतिम दौर के लिए चुनी गयीं 3 फिल्में थीं 'मुन्ना' (1954), 'अब दिल्ली दूर नहीं' और 'हम पंछी एक डाल के' (दोनों 1957)। जगदीप ने इन तीनों ही फिल्मों में अहम भूमिकाएं निभायी थीं। इस प्रतियोगिता में 'सर्वश्रेष्ठ बाल-फिल्म' का पुरस्कार 'हम पंछी एक डाल के' ने जीता था।

'पास बैठो तबीयत बहल जाएगी'-जगदीप

साल 1975 में आई फिल्म 'शोले' की जबर्दस्त कामयाबी ने फिल्म के छोटे से छोटे किरदार और उन किरदारों को निभाने वाले तमाम कलाकारों को मशहूरी की बुलंदियों पर पहुंचा दिया था। इन्हीं कलाकारों में शामिल थे 'सूरमा भोपाली' यानि अभिनेता जगदीप जिन्होंने बतौर एक एक्टर फिल्मों में कदम रखा था और जो एक सफल बाल कलाकार और फिर हीरो के तौर पर कई फिल्में करने के बावजूद इन 25 सालों में अपनी कोई खास पहचान नहीं बना पाए थे। लेकिन फिल्म 'शोले' की कामयाबी ने उन्हें रातों-रात स्टार बना दिया था।

जगदीप से मेरी पहली मुलाकात साल 1999 में प्रसारित हुए दूरदर्शन धारावाहिक 'ट्रक धिना धिन' के सेट पर हुई थी जिसका निर्माण (स्व.) प्रमोद महाजन के बेटे राहुल महाजन ने किया था। इस शो के निर्देशक फिल्म 'स्वदेस' के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त, विज्ञापन और फिल्म जगत के मशहूर सिनेमैटोग्राफर महेश आनेय थे। वरिष्ठ लेखक-निर्देशक प्रयागराज और 'कौन बनेगा करोड़पति' के लेखक आर.डी. तैलंग के लिखे इस काऊण्ट डाऊन शो 'ट्रक धिना धिन' के कार्यकारी निर्माता मशहूर पोस्टर संग्राहक एस.एम.एम. औसजा थे जो आज जानी-मानी नीलामी कम्पनी 'ओसियान' के उपाध्यक्ष और ब्लॉग 'बीते हुए दिन' के अभिन्न अंग हैं। इस धारावाहिक में जगदीप और उनके बेटे जावेद जाफरी मामा-भांजे की ट्रक ड्राईवर जोड़ी के रूप में नजर आए थे और ये अपने दौर का सबसे ज्यादा टी.आर.पी. वाला शो था। इस एपिसोडिक शो के विभिन्न एपिसोड्स में मुझे कई अहम किरदार निभाने को मिले थे।

मुम्बई आए मुझे ज्यादा समय नहीं हुआ था। दिलो-दिमाग पर फिल्मों और टी.वी. का ग्लैमर हावी था। फिल्म 'शोले' के सूरमा भोपाली को साक्षात अपने सामने खड़ा देखा तो छोटे शहर से आए किसी भी शख्स की तरह मेरे भी छक्के छूट गए। लेकिन उनके दोस्ताना व्यवहार ने जल्द ही सहज होने में मेरी बहुत मदद की और उनके साथ काम करने का अनुभव भी बेहद सुखद और अविस्मरणीय रहा। 'ट्रक धिना धिन' के बन्द होने के बाद भी उनसे कभी-कभार मुलाकात होती रही। और जब साप्ताहिक 'सहारा समय' से मेरे लेखन की शुरूआत हुई तो एक रोज मैं जगदीप जी के बान्द्रा (पश्चिम) स्थित घर पर एक नए किरदार में मौजूद था। मेरे कॉलम 'क्या भूलूं क्या याद करूं' में प्रकाशित उनके इंटरव्यू को पाठकों ने बेहद पसन्द किया था।

29 मार्च, 1939 को मध्यप्रदेश के दतिया में जन्मे जगदीप के पिता दतिया रियासत के जाने-माने बैरिस्टर थे। जगदीप का असली नाम सैयद इश्तियाक अहमद जाफरी है, लेकिन घर में प्यार से उन्हें मुन्ना कहकर बुलाया जाता था। जगदीप महज 8 साल के थे जब उनके पिता गुजरे और कुछ ही दिनों बाद देश का बंटवारा भी हो गया। जगदीप कहते हैं, 'बंटवारे की वजह से हमारा पूरा परिवार तितर-बितर हो गया था। कुछ लोग पाकिस्तान चले गए तो मां मुझे साथ लेकर दतिया से मुम्बई आ गयीं जहां मेरा बड़ा भाई रहता था। लेकिन भाई ने हमें पनाह देने से साफ़ इंकार कर दिया। मजबूरन मां को मुझे साथ लेकर जे.जे.अस्पताल के सामने फुटपाथ पर डेरा डालना पड़ा।'

मां चाहती थीं कि जगदीप सिर्फ पढ़ाई की तरफ ध्यान दें। पेट पालने के लिए उन्होंने लोगों के घरों में पानी भरा, यतीमखाने में खाना पकाया, लेकिन जगदीप मां का हाथ बंटाना चाहते थे। वो कहते हैं, 'मां की हालत देखकर मुझे बहुत दुख होता था और इसीलिए मैं उनका सहारा बनना चाहता था। मां की इच्छा के विरूद्ध मैंने पढ़ाई छोड़ दी। पैसा कमाने के लिए मैंने टिन के कारखाने में मजदूरी की, पतंगें बनाईं, फुटपाथ पर कंघी और साबुन बेचा। तभी एक रोज फिल्मों का एक एक्स्ट्रा सप्लायर तीन रूपया मेहनताने का लालच देकर फुटपाथ के हम सभी बच्चों को बी.आर.चोपड़ा की फिल्म 'अफसाना' की शूटिंग पर लेकर गया। हमें फिल्म के एक सीन में नाटक देख रही भीड़ में बैठा दिया गया।'

उस सीन में मंच पर बेबी तबस्सुम और मास्टर रतन कुमार के अलावा दरबान बना एक बच्चा मौजूद था जो ठीक से डायलॉग नहीं बोल पा रहा था। यश चोपड़ा उस फिल्म में असिस्टेंट डायरेक्टर थे। उनके कहने पर वो डायलॉग जगदीप ने बोला जो सबको बेहद पसन्द आया। लोगों में 'मास्टर मुन्ना' की चर्चा हुई और उसी रोज उन्हें तीन-चार और फिल्मों में काम मिल गया। जगदीप बताते हैं, 'मैं डायलॉग बोलने के लिए इसलिए तैयार हुआ क्योंकि मुझे पता चला था, इसके तीन की जगह छह रूपए मिलेंगे। फिल्म 'अफसाना' साल 1951 में रिलीज हुई थी जिसके बाद मैंने 'आराम', 'काले बादल', 'भोला शंकर', 'मुरलीवाला' (सभी 1951), 'आसमान' (1952) और 'आरपार' (1954) जैसी करीब बीस फिल्मों में बतौर बाल कलाकार छोटी-छोटी भूमिकाएं कीं।'

फिल्म 'आरपार' का शीर्षक गीत 'कभी आर कभी पार लागा तीरे नजर' मूल रूप से जगदीप पर फिल्माया गया था। लेकिन सेंसर बोर्ड को इस गीत का

लोगों में 'मास्टर मुन्ना' की चर्चा हुई और उसी रोज उन्हें तीन-चार और फिल्मों में काम मिल गया। जगदीप बताते हैं, 'मैं डायलॉग बोलने के लिए इसलिए तैयार हुआ क्योंकि मुझे पता चला था, इसके तीन की जगह छह रूपए मिलेंगे।

एक नाबालिग लड़के पर फिल्माया जाना अश्लील महसूस हुआ इसलिए इसे फिल्म से हटाने का आदेश दे दिया गया। उधर फिल्म रिलीज पर थी इसलिए इस गीत को कुमकुम पर रीशूट किया गया, हालांकि जगदीप के भी कुछ शॉट्स इस गीत में रखे गए थे।

जगदीप को पहला बड़ा ब्रेक 'रणजीत मूवीटोन' की फिल्म 'धोबी डॉक्टर' (1954) में मिला था जिसमें उन्होंने फिल्म के हीरो किशोर कुमार रोल के बचपन का रोल किया था। इस फिल्म में उन्होंने खुद ही अपना नाम मास्टर मुन्ना से बदलकर जगदीप रख लिया था। जगदीप बताते हैं, 'फिल्म 'धोबी डॉक्टर' का वो रोल छोटी-छोटी बातों पर रो पड़ने वाले एक बेहद ही भावुक किस्म के बच्चे का था। फिल्म के रशेज देखकर बिमल रॉय ने मुझे फिल्म 'दो बीघा जमीन' में एक हास्य भूमिका दी। उन्होंने कहा था, 'जो कलाकार लोगों को अच्छा रूला सकता है वो अच्छा हंसा भी सकता है।' उनकी कही बात सच साबित हुई। फिल्म 'दो बीघा जमीन' में 'लल्लू उस्ताद' का मेरा चरित्र इतना मशहूर हुआ कि मेरे प्रशंसक रूसी बच्चों ने ख्वाजा अहमद अब्बास के हाथों खासतौर से मेरे लिए एक लाल स्कार्फ उपहार में भेजा था।'

साल 1953 में बनी 'दो बीघा जमीन' वो पहली हिंदी फिल्म थी जिसका प्रीमियर अंग्रेजी फिल्मों के लिए मशहूर मुम्बई के 'मैट्रो सिनेमा हॉल' में हुआ था। जगदीप बताते हैं, 'प्रीमियर वाले दिन रेडियो सीलोन के लिए जो युवक इस फिल्म से जुड़े कलाकारों और तकनीशियनों के इंटरव्यू ले रहा था उसने मुझसे वादा किया था कि वो जल्द ही मेरा इंटरव्यू भी लेगा। लेकिन वो दिन कभी नहीं आया। एक रोज रमेश सहगल ने अपनी नयी फिल्म के हीरो की भाषा सुधरवाने के लिए मुझे बुलाया तो मैंने देखा सामने वो ही रेडियो सीलोन वाला युवक बैठा था। फिल्म थी साल 1955 में बनी 'रेलवे प्लेटफार्म' और वो हीरो थे सुनील दत्त।'

साल 1957 में आयोजित 'बाल फिल्म समारोह' के अंतिम दौर के लिए चुनी गयीं 3 फिल्में थीं 'मुन्ना' (1954), 'अब दिल्ली दूर नहीं' और 'हम पंछी एक डाल के' (दोनों 1957)। जगदीप ने इन तीनों ही फिल्मों में अहम भूमिकाएं निभायी थीं। इस प्रतियोगिता में 'सर्वश्रेष्ठ बाल-फिल्म' का पुरस्कार 'हम पंछी एक डाल के' ने जीता था। तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू जगदीप के अभिनय से इतने प्रभावित थे कि समारोह के दौरान उन्होंने खुश होकर अपने हाथ का रूल जगदीप को भेंट किया था। जगदीप के अनुसार उन्होंने आज भी वो रूल बेहद एहतियात के साथ सम्भालकर रखा हुआ है।

'हम पंछी एक डाल के' के बाद जगदीप को मद्रास की कम्पनी 'ए.वी.एम.' में स्थायी नौकरी पर रख लिया गया। कांट्रेक्ट के मुताबिक

जगदीप अब ए.वी.एम. से बाहर की फिल्में नहीं कर सकते थे। साल 1957 में बनी इस बैनर की 'भाभी' में जगदीप पहली बार हीरो बने। अभिनेत्री नन्दा इस फिल्म में उनकी हिरोईन थीं। फिल्म 'भाभी' अपने दौर की बेहद कामयाब फिल्मों में से थी। ए.वी.एम. की ही फिल्म 'बरखा' (1959) में भी नन्दा और जगदीप की जोड़ी को बेहद पसंद किया गया। जगदीप के मुताबिक रंगीन फिल्मों का दौर शुरू हुआ तो उन्हें सुबोध मुखर्जी ने फिल्म 'जंगली' के हीरो के तौर पर लेना चाहा। लेकिन 'ए.वी.एम.' ने इजाज़त देने से साफ़ इंकार कर दिया। यही उन 'बी.आर.' की 'धर्मपुत्र' के वक्त हुआ जिनकी फिल्म 'अफसाना' से जगदीप ने अपना करियर शुरू किया था।

जगदीप कहते हैं, 'बिमल रॉय की फिल्म 'प्रेमपत्र' में भी मेरे साथ यही हुआ तो 'ए.वी.एम.' की सहमति के बावजूद मैंने कुण्ठित होकर 'ए.वी.एम.' के प्रिय लेखक राजेन्द्र कृष्ण के निर्माता भाई हरगोविन्द की फिल्म 'शादी' में काम करने से साफ इंकार कर दिया। बाद में यह रोल मनोज कुमार ने किया। मेरे इंकार से नाराज होकर 'ए.वी.एम.' ने मेरे साथ हुआ कांट्रेक्ट तोड़ दिया। उसके बाद मैंने 'बैंड मास्टर', 'राजा' (दोनों 1963), 'पुनर्मिलन' (1964), 'नूरमहल' (1965) जैसी कुछेक फ़िल्में बतौर हीरो कीं लेकिन इनमें से कोई भी फिल्म चल नहीं पायी।'

हीरो के तौर पर नाकाम रहने के बाद जगदीप ने कुछ समय के लिए ब्रेक ले लेना बेहतर समझा। साल 1968 में बनी फ़िल्म 'ब्रह्मचारी' में उन्हें एक बार फिर से हास्य भूमिका करने का मौक़ा मिला। उसके बाद वो 'जीने की राह', 'खिलौना', 'जिगरी दोस्त', 'अपना देश', 'एजेंट विनोद', 'सुरक्षा', 'तराना' से लेकर 'सनम तेरी कसम', 'अंदाज अपना अपना', 'वो सात दिन', 'लज्जा' और 'अजब प्रेम की गजब कहानी' तक साढ़े तीन सौ से भी ज्यादा फिल्मों में बतौर हास्य कलाकार नजर आए। फिल्म 'शोले' की जबर्दस्त कामयाबी से उत्साहित होकर उन्होंने बतौर निर्माता-निर्देशक फ़िल्म 'सूरमा भोपाली' बनाई जो साल 1988 में प्रदर्शित हुई थी। साल 2012 में प्रदर्शित हुई 'गली गली में चोर है' जगदीप की अभी तक की आख़िरी प्रदर्शित फ़िल्म है। जगदीप के दोनों बेटे जावेद और नवेद जाफरी फिल्मों और टी.वी. कार्यक्रमों से जुड़े हुए हैं। जगदीप कहते हैं, 'जीवन सुकून से गुजर रहा है और चाहता हूं, ऐसे ही गुजरता रहे।'

शिशिर कृष्ण शर्मा
फिल्म इतिहासकार

मेरा बचपन

बात उन दिनों की है जब मैं सातवीं कक्षा में पढ़ती थी। दीदी को किसी फंक्शन के लिए कड़े खरीदने थे, तो मैं भी उनके साथ बाजार गई थी।

उन दिनों ब्लैक मेटल के कड़े फैशन में थे। जब दीदी के लिए पसंद कर रहे थे तो मेरी नज़र एक कड़े पर पड़ी।मैने हाथ में पहनकर देखा,बहुत खूबसूरत लग रहा था।मैने कीमत पूछी, तो दुकानदार ने कहा 200 रुपये। दीदी से पूछा मैं ले लूँ।तो दीदी ने कहा नहीं.... बहुत महंगे हैं।अभी कोई फालतू खर्च नहीं करना।

गौरतलब है कि उन दिनों घर की माली हालत सही नहीं थी।एक एक रुपया सोचसमझकर खर्च करना पड़ता था।पर बालमन तो चंचल होता है।चीज भा गई तो बस चाहिए। मैंने हाथ में पहना कड़ा अपने स्वेटर की जेब में सरका दिया।

एक बार तो बड़ी खुश हुई पर अगले ही पल मेरे संस्कारों ने मुझे धिक्कारा।चोरी...नहीं, मैं ये नहीं कर सकती,और ये भाव मन में आते ही मैंने जेब में हाथ डालकर वो कड़ा यथास्थान रख दिया।अब मन में संतोष था। उधर दुकानदार ने बिल बनाया तो उस कड़े की कीमत भी बिल में जोड़ दी।

दीदी ने कहा भैया,एक ही कड़ा तो लिया है,आपने 2 की कीमत क्यों जोड़ दी,तो भैया बोले,एक कड़ा आपकी बहन ने जेब में रख लिया है ना।दीदी बोली तूने रखा है क्या,तो मैंने तुरंत मना कर दिया।दुकानदार बोला जेब चेक करो इनकी,इन्होंने मेरी आँखों के सामने रखा है। अलबत्ता मेरी जेबें टटोली गई,पर वहाँ कोई कड़ा नहीं था। दीदी ने दुकानदार को डांटा और कहा आपने ऐसे कैसे इल्ज़ाम लगा दिया।हम चोर दिखते हैं क्या आपको...? और फिर भैया ने अपने किये की क्षमा माँगी।

वहाँ से तो निकल लिए,पर एक सीख ज़िन्दगी भर के लिए मिल गई। आज भी जब उस घटना को याद करती हूँ,तो एक ही प्रश्न दिमाग में कौंधता है,अगर मैंने वो कड़ा वापस ना रखा होता तो...? दुकानदार के सामने पानी पानी तो होती ही,दीदी से डांट भी खाती और घर पर आकर पापा मम्मी से कैसे नज़रें मिलाती। उस दिन का दिन था और आज तक चोरी करने की हिम्मत नहीं हुई। अच्छे संस्कार बोलते हैं।

अर्चना जैन

माही संदेश

मासिक पत्रिका के सदस्य बनें

: कार्यालय :

माही संदेश, 50-51ए, कनक विहार कमला नेहरु नगर के पास, अजमेर रोड, हीरापुरा जयपुर (राजस्थान)।

सदस्यता शुल्क

वार्षिक : ₹ 400
पंचवर्षीय : ₹ 2000
आजीवन : ₹ 5000

चेक 'Mahi sandesh' (माही संदेश) के नाम से देय एवं रेखांकित होना चाहिए। रजिस्टर्ड डाक से प्रति मंगवाने पर अतिरिक्त देय डाकखर्च शुल्क भेजें।

भवदीय,
'रोहित कृष्ण नंदन'
संपादक
'माही सन्देश'

खाता संख्या : 37802854186
IFSC: SBIN0032385
भारतीय स्टेट बैंक
शाखाः कनक विहार, हीरापुरा, अजमेर रोड, जयपुर
पेटीएम-9887409303

माही संदेश मासिक पत्रिका से प्रशिक्षु पत्रकार/मार्केटिंग मैनेजर/ग्राफिक डिजाइनर रूप में जुड़कर समाज में अपनी पहचान बनाने का सुनहरा अवसर

पत्रकारिता में अध्ययनरत छात्र-छात्राएं और सामाजिक व साहित्यिक क्षेत्र से जुड़ी महिलाओं को प्राथमिकता

सम्पर्क : संपादक, माही संदेश, मो. 9887409303
email-mahisandesheditor@yahoo.com

तस्वीर बोल उठी-8

इस तस्वीर को देखकर आपके मन में जो भाव उमड़ रहे हैं बस उन भावों को काव्य भाषा की चार पंक्तियों में लिख डालिए। सर्वश्रेष्ठ प्रविष्टियों को माही संदेश के अगले अंक (अंतिम तिथि 20 नवम्बर) में प्रकाशित किया जाएगा-

तस्वीर : अनुरागी मन

रचना भेजने का पता
संपादक

माही संदेश, 50-51ए, कनक विहार कमला नेहरु नगर के पास, अजमेर रोड, हीरापुरा जयपुर- 302021(राजस्थान)।
email-mahisandesh31@gmail.com

तस्वीर बोल उठी-7 के अन्तर्गत काफी संख्या में रचनाएं प्राप्त हुई सर्वश्रेष्ठ रचना को यहां प्रकाशित किया जा रहा है।

सांवरी सुरत ऐसी, मोहिनी मूरत जैसी।
नजरें झुकाऊं तो नजर नहीं झुकती।

अद्भुत है श्रृंगार, मुकुट गजब हार।
नैनन करे प्रहार, नजरें जो मिलतीं।।

कबिराज़ चेतन, तीरथ, बूंदी (राज.)

माही संदेश मासिक पत्रिका के सदस्य बनें और आरडी ब्यूटी पार्लर की सेवाओं पर 50 प्रतिशत की छूट पाएं

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी/450/2018-20
समाचार पत्र की पंजीयन संख्या : RAJHIN/2018/75539

प्रकाशन की तिथिः माह की 1 तारीख
प्रेषण दिनांक : हर माह की 5 तारीख, सी.एस.ओ. गांधीनगर, जयपुर

माही संदेश राष्ट्रीय समाचार पत्रिका को पाठकों का भरपूर स्नेह प्राप्त हो रहा है। हमने कुछ नये व नियमित स्तंभ आरंभ किए हैं, हम चाहते हैं कि आप माही संदेश में वैचारिक रूप से अपना योगदान दें।

मेरा बचपन

इसमें आप अपने बचपन की यादें तथा आपके दौर का बचपन कैसा था पर अपने विचार भेज सकते हैं।

जय जवान

यदि आप सेना से हैं या आम नागरिक हैं तो इस स्तंभ में आप एक जवान या आर्मी अफसर के बारे में लिख सकते हैं।

सेहत संदेश

अगर आप चिकित्सक हैं या नर्सिंग स्टाफ तो यहां सेहत से जुड़ी जानकारी दे सकते हैं।

नारी मन

यदि आप गृहिणी या कामकाजी महिला हैं तो अपने मन की बात यहां लिख सकती हैं।

जन सेवक

यदि आप किसी सामाजिक संस्था से जुड़े हैं या कार्य कर रहे हैं या आप राजनीति में हैं तो आप इस स्तंभ के लिए संपर्क कर सकते हैं।

पाठशाला

इसके अंतर्गत आप अपने स्कूल या उसमें आयोजित होने वाली विभिन्न तरह की गतिविधियों के बारे में हमें बता सकते हैं।

काव्य कलम/कथा संदेश

आपको कविता, गीत,कहानी आदि लिखना पसंद है तो इस स्तंभ के लिए आपका स्वागत है।

साथ ही अगर आप कुछ नए स्तंभ चाहते हैं तो आपके सुझाव आमंत्रित हैं।

सम्पर्क

संपादकः माही संदेश
9887409303

सेवा में,

प्रेषक :
संपादक (माही संदेश)
50-51 ए, कनक विहार, कमला नेहरु नगर के पास, अजमेर रोड, हीरापुरा जयपुर-302021 (राजस्थान)।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक **रोहित कृष्ण नन्दन** द्वारा कांति ऑफसेट प्रिन्टर्स, 448, बाक्लीवाल भवन, लाल जी सांड का रास्ता, जयपुर से छपवाकर माही संदेश, 50-51ए, कनक विहार, कमला नेहरु नगर, अजमेर रोड, जयपुर-302021 से प्रकाशित किया। **मो. 9887409303**